वार्षिक प्रतिवेदन

2021-22

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

पूसा, समस्तीपुर, बिहार-848125

www.rpcau.ac.in

वार्षिक प्रतिवेदन
(2021 -22)

संरक्षक:

डॉ. रमेश चन्द्र श्रीवास्तव
कुलपति, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा

संकलन, संपादन एवं वैज्ञानिक हिंदी अनुवाद:

डॉ. राकेश मणि शर्मा एवं गुप्तनाथ त्रिवेदी

संपादक मंडल

डॉ. मोती लाल मीणा ,सह-प्राध्यापक
डॉ. पी. के. प्रणव, सह-प्राध्यापक
डॉ. सपना, सहायक प्राध्यापक
डॉ. सुधा नन्दिनी, सहायक प्राध्यापक
डॉ. आशीष कुमार पंडा, सहायक प्राध्यापक
डॉ. कुमार राज्यवर्धन, सलाहकार,सूचना एवं प्रसार

तकनीकी सहयोग:

श्री मनीष कुमार, पुस्तकालय सहायक

प्रकाशन प्रभार:

प्रकाशन प्रभाग,
डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा, (समस्तीपुर), बिहार - 848125

मुद्रण :

डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, बिहार
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा की वर्ष 2021-22 समीक्षा

प्रमाणीकृत

पृष्ठभूमि

यह विश्वविद्यालय पूंजी के रूप में राज्य कृषि विश्वविद्यालय के रूप में 1970 में स्थापित राजेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा तथा इससे भी पूर्व 1905 में स्थापित कृषि अनुसंधान संस्थान और महाविद्यालय की विरासत को संजोये हुए है। विश्वविद्यालय अपने अधिकार क्षेत्र और जिम्मेदारियों का विस्तार करते हुए कृषि और संबद्ध विज्ञान के विषयों में शिक्षण, अनुसंधान और प्रसार के क्षेत्र में सम्पूर्ण भारत में तथा विशेषकर गृह राज्य बिहार में अपनी सेवाओं का निर्वहन कर रहा है। विश्वविद्यालय की शैक्षणिक संरचना में 08 महाविद्यालय शामिल हैं। तिरहुत कृषि महाविद्यालय, ढोली, स्नातकोत्तर कृषि महाविद्यालय, पूसा, कृषि अभियांत्रिकी एवं तकनीकी महाविद्यालय, पूसा, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय, पूसा, आधार विज्ञान और मानविकी महाविद्यालय, पूसा, मत्स्यिकी महाविद्यालय ढोली, और पं. दीन दयाल उपाध्याय उद्यानिकी और वानिकी महाविद्यालय, पीपराकोठी सहित कृषि-व्यवसाय और ग्रामीण प्रबंधन विद्यालय, पूसा शामिल है जिनमे कुल 245 वैज्ञानिक/शिक्षक कार्यरत है। विश्वविद्यालय में छह चीनी मिलों से जुड़े छह गन्ना परीक्षण केंद्रों के अलावा आठ बहु-विषयक अनुसंधान केंद्रों /संस्थानों और तीन क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्रों का नेटवर्क है। विश्वविद्यालय के विस्तार में 18 (16+2) कृषि विज्ञान केंद्र और कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केंद्र (ए.टी.आई.सी) शामिल हैं जो विश्वविद्यालय की प्रौद्योगिकी गतिविधियों की देखरेख करते हैं।

उपलब्धियां

शैक्षणिक एवं अकादमिक

वर्ष 2021-22 के दौरान विश्वविद्यालय ने शिक्षण, अनुसंधान, प्रसार और प्रशासन के क्षेत्र में सराहनीय प्रयास किया। कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण जनशक्ति तैयार करने के लिए कुल 15 नए पाठ्यक्रम (Ph.D.-03, PG-02, UG-02, PG डिप्लोमा- 03 और सर्टिफिकेट कोर्स-05) शुरू किए गए। प्रवेश के क्षेत्र में भारत के 27 राज्यों के कुल 687 छात्रों को प्रवेश दिया गया, इस प्रकार विश्वविद्यालय में छात्रों की अखिल भारतीय उपस्थिति को दर्शाते हुए पिछले वर्ष की तुलना में वृद्धि दर्ज की गई। इसी वर्ष विश्वविद्यालय के 125 छात्रों ने एस.आर.एफ/जे.आर.एफ./गेट/यू.जी.सी. जैसी विभिन्न राष्ट्रीय स्तर की परीक्षाओं को उत्तीर्ण भी किया।

अनुसंधान और नवाचार

अनुसंधान के क्षेत्र में विश्वविद्यालय के पास 149 अनुसंधान परियोजनाएं रहीं जिनमें 82 विश्वविद्यालय वित्तपोषित परियोजनाएं शामिल हैं। 35 अखिल भारतीय समन्वित अनुसन्धान परियोजनाएं, 16 केन्द्रीय वित्त पोषित परियोजनाएं, 06 बिहार राज्य सरकार सहित 04 अंतर्राष्ट्रीय परियोजनाएं और 06 अन्य एजेंसियों द्वारा वित्तपोषित परियोजनाएं भी शामिल रहीं। विश्वविद्यालय ने विभिन्न फसलों की कई प्रभेद भी विकसित किये जैसे राजेंद्र अरवी-2, राजेंद्र शकरकंद-7, राजेंद्र मिश्रीकंद-3, राजेंद्र परवल-3 आईसी-0640201, राजेंद्र गन्ना-3 और राजेंद्र गन्ना-4 जिन्हें एसवीआरसी/सीवीआरसी के माध्यम से अधिसूचित किया गया। साथ ही ग्यारह प्रौद्योगिकियों/उत्पादों का भी विकास किया गया जिनमें रतालू के बीज का सत्त सरसों में एफिड्स के प्रबंधन के लिए एक सुरक्षित कीटनाशक के रूप में, हैंड-क्रैंक्ड इम्प्रूव्ड चक्की, राजेंद्र मशरूम पनीर, राजेंद्र पूसा नमकीन मशरूम बिस्किट, राजेंद्र पूसा मशरूम गुलाब जामुन,

राजेंद्र मशरूम सबस्ट्रेट स्टरलाइज़र, मैनुअल गोभी हार्वेस्टिंग मशीन, तुलसी (Ocimum sanctum L.) की फसल ज्यामिति एवं उसके लगाने का मानकीकरण, नाव आधारित सौर फोटोवोल्टिक में रोपण समय और फसल ज्यामिति पम्पिंग सिंचाई प्रणाली, विभिन्न मक्का-दाल आधारित कृषि के लिए सिंचाई और पोषक तत्व प्रबंधन इंटरक्रॉपिंग, कम लागत वाली लीची आधारित मछली फ़ीड और भिंडी की कटाई के लिए हस्त चालित उपकरण का विकास प्रमुख रहे। इसके अलावा रिपोर्ट अवधि के दौरान आठ पेटेंट के आवेदन भी दायर किए गए।

प्रसार

किसानों की आय बढ़ाने और किसान अनुकूल प्रौद्योगिकियों और उत्पादों का प्रदर्शन करने और उन्हें किसानों को हस्तांतरित करने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय द्वारा 44 कृषक मेलों का आयोजन किया गया साथ ही 1916 एफ.एल.डी, 23267 एफ.सी.एस और 2026 किसान प्रशिक्षण आयोजित किये गये। 160 प्रौद्योगिकी मूल्यांकन परीक्षणों एवं अन्य प्रशिक्षणों से लगभग 10 हजार से अधिक किसान लाभान्वित हुए, साथ ही, किसानों के प्रश्नों के समाधान के लिए किसान कॉल सेंटरों को भी मजबूत किया गया। इनके अलावा कृषि में उत्कृष्टता के छह केंद्र, जलवायु परिवर्तन, खाद्य प्रसंस्करण और पोषण, जल प्रबंधन, अपशिष्ट प्रबंधन, मशरूम उत्पादन और स्टार्ट अप सुविधा केंद्र, जैसे चुनौतीपूर्ण क्षेत्र में लगातार कृषक केंद्रित अनुसंधान, नवाचार और प्रशिक्षण प्रदान किये जा रहे हैं।

प्रशासनिक और अवसंरचनात्मक उपलब्धियां

विश्वविद्यालय ने शिक्षा एवं अनुसन्धान को उत्कृष्ट बनाने हेतु वैज्ञानिक/शिक्षण जनशक्ति पूल को मजबूत किया है एवं अध्यापन एवं अनुसन्धान की गुणवत्ता बनाये रखने के उद्देश्य से - 23 फैकल्टी/वैज्ञानिक, 3 तकनीकी, 113 प्रशासनिक एवं 09 कुशल सहायक कर्मचारियों की भर्ती एवं - 111 संकाय/वैज्ञानिक, 25 प्रशासनिक एवं 04 सहायक कर्मचारियों की प्रोन्नति की गयी। कर्मचारियों एवं छात्रों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की भलाई के लिए विश्वविद्यालय एक नया खेल-परिसर/स्टेडियम भी विकसित कर रहा है। विदेशी छात्रों और विशेषज्ञों को आकर्षित करने के लिए इंटरनेशनल गेस्ट हाउस का निर्माण भी प्रगति पर है।

अभिज्ञान और पुरस्कार

आजादी के 75 वें वर्ष में जब हमारा देश "आजादी का अमृत महोत्सव" मना रहा है, डॉ. रा. प्र. के. कृ. वि., पूसा ने अपने उपलब्धियों में एक और उपलब्धि जोड़ी जब विश्वविद्यालय द्वारा परिकल्पित और परिचालित मधुबनी जिले के सुखेत मॉडल का उल्लेख माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के द्वारा "मन की बात" कार्यक्रम के 80वें संस्करण में रविवार 29 अगस्त 2021 को सुबह 11.00 बजे राष्ट्र के नाम संबोधन में किया किया गया। भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद, नयी दिल्ली के 93वें स्थापना दिवस यानी 16 जुलाई 2021 के अवसर पर, कृषि विज्ञान केंद्र, पिपराकोठी को पंडित दीनदयाल उपाध्याय कृषि विज्ञान प्रोत्साहन पुरस्कार-2020 पसे नवाजा गया। सर्वश्रेष्ठ कृषि विज्ञान केंद्र- केवीके बिरौली, अभिनव किसान पुरस्कार- 2021- श्रीमती रेखा देवी, ग्राम- मानिकपुर, सरैया (मुजफ्फरपुर) को प्रदान किया गया। उपरोक्त पुरस्कारों के अलावा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को भी उनकी अकादमिक और अनुसंधान उत्कृष्टता के लिए विभिन्न सोसायटियों/संघों और संगठनों द्वारा विभिन्न स्तरों के (16 अंतर्राष्ट्रीय, 77 राष्ट्रीय और 01 राज्य स्तर) कुल 94 पुरस्कार भी प्रदान किये गये।

प्रकाशन

कुल 560 शोध प्रकाशन (447 शोध लेख, 12 पुस्तकें, 40 पुस्तक अध्याय, 30 प्रशिक्षण नियमावली, 04 नीति पत्र, 5 तकनीकी बुलेटिन, 13 अनुसंधान बुलेटिन प्रकाशित किये गये और 03 पेटेंट लाइसेंस और 02 पेटेंट प्राप्त किए गए साथ हीं 08 पेटेंट आवेदन भी भरे गए।

राजस्व उत्पत्ति

विश्वविद्यालय ने वर्ष 2021-22 के दौरान 20.12 करोड़ रुपये का राजस्व अर्जित किया।

डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, बिहार
वर्ष 2021-22 के वार्षिक प्रतिवेदन का विलंब विवरण

डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर, बिहार, का वर्ष 2021-22 का वार्षिक प्रतिवेदन अगस्त माह 2022 में तैयार किया गया। 2021-22 के वार्षिक प्रतिवेदन को दिनांक 23-05-2023 को प्रबंध बोर्ड से अनुमोदन के लिए कुलसचिव को प्रस्तुत किया गया और अंततः दिनांक 19-08-2023 को प्रबंध बोर्ड द्वारा अनुमोदित किया गया। कुछ प्रशासनिक कारणों से 2021-22 की वार्षिक प्रतिवेदन को प्रस्तुत करने और अनुमोदन में विलम्ब हुआ।

वर्ष 2021-22 का वार्षिक प्रतिवेदन को प्रस्तुत करने और अनुमोदन में विलम्ब के कारणों को दर्शाने वाला विवरण निम्नवत है।

1	विश्वविद्यालय के प्रबंधन बोर्ड द्वारा अनुमोदन के लिए वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत करने की तिथि	23-05-2023
2	प्रबंधन बोर्ड द्वारा वार्षिक प्रतिवेदन का अनुमोदन	19-08-2023
3	आगंतुक के स्वीकृति के लिए वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत करना	29-09-2023
4	आगंतुक के स्वीकृति की प्राप्ति	17-10-2023
5	वार्षिक रिपोर्ट की मुद्रित प्रतियों की प्राप्ति	
6	मुद्रित प्रतियों को संसद में रखने के लिए डेयर को प्रस्तुत करना	

माननीय कुलपति महोदय का सन्देश

विश्वविद्यालय की वर्ष 2021-22 की छठी वार्षिक रिपोर्ट उसके संक्षिप्त प्रारूप में प्रस्तुत करना मेरे लिए हर्ष का विषय है। रिपोर्ट वर्ष के दौरान, विश्वविद्यालय ने सभी क्षेत्रों यथा अकादमिक उत्कृष्टता, पर्यावरणीय अनुकूल प्रौद्योगिकी विकास सहित प्रसार और बुनियादी ढांचे के विकास में महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। स्वतंत्रता प्राप्ति के 75वें वर्ष में जब हमारा देश "आजादी का अमृत महोत्सव" मना रहा है, ऐसे में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा अपने "मन की बात" के 80वें संस्करण में रविवार 29 अगस्त 2021 को पूर्वाह्न 11.00 बजे राष्ट्र को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय द्वारा अवधारणीत और संचालित मधुबनी जिले के "सुखेत मॉडल" का उल्लेख करना, विश्वविद्यालय के लिए गर्व का विषय रहा।

सुखेत के अपशिष्ट प्रबंधन मॉडल के कार्यप्रवाह से प्रभावित होकर माननीय प्रधान मंत्री जी ने, देश की प्रत्येक पंचायत में इसे दोहराने की आवश्यकता पर बल दिया है। उन्होंने कहा कि सुखेत मॉडल पर्यावरण के अनुकूल और प्रदूषण मुक्त मॉडल है जो निश्चय हीं गाँवों में स्वच्छता अभियान को बढ़ाएगा, जिससे "स्वच्छ भारत अभियान" को बढ़ावा मिलेगा । सुखेत मॉडल बायो-डिग्रेडेबल कचरे के बदले गैस सिलेंडर की आपूर्ति करके ग्रामीणों के खाना पकाने के स्वच्छ ईंधन एवं पर्यावरणीय मुद्दों का समाधान करता है। यह स्वच्छ ऊर्जा के उपयोग और आसपास की स्वच्छता को बढ़ावा देता है। इसलिए, यह अपशिष्ट और मिट्टी की उर्वरता प्रबंधन के साथ-साथ भोजन पकाने के ईंधन और स्वच्छता प्रबंधन के लिए लागत प्रभावी दृष्टिकोण से एक बहुत ही बढ़िया समाधान देता है जिससे देश "आत्मनिर्भर भारत" बनने की दिशा में अग्रसर होगा । हमारे प्रयासों की सराहना करने और किसान समुदाय की सेवा करने के लिए हमें प्रोत्साहित करने हेतु विश्वविद्यालय परिवार, माननीय प्रधानमंत्री महोदय का धन्यवाद और सादर आभार व्यक्त करता है।

शिक्षा और अनुसंधान में उत्कृष्टता हेतु विश्वविद्यालय को दिए जाने वाले सम्मानों की श्रृंखला में, एक और सम्मान जुड़ा जब भारतीय डाक, संचार मंत्रालय, भारत सरकार ने 24 फरवरी 2022 को विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सुखेत मॉडल पर प्रथम दिवस कवर और डाक टिकट जारी किया।

वर्ष 2021-22 विश्वविद्यालय के लिए गौरवशाली एवं प्रतिष्ठित वर्ष रहा जिसमे दो बहुत ही महत्वपूर्ण कार्यक्रम (यथा दीनदयाल उपाध्याय बागवानी एवं वानिकी महाविद्यालय, पिपराकोठी में विश्वविद्यालय का द्वितीय दीक्षांत समारोह और भारतीय कृषि अभियंता संघ के 55वें वार्षिक सम्मेलन तथा अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन ज्ञान भवन, पटना में) का ऑफ-कैंपस आयोजन सफलतापूर्वक किया गया। ये दोनों कार्यक्रम पूसा मुख्य परिसर से लगभग 120 कि.मी. की दूरी पर अयोजित किये गये। साथ हीं इन -कैंपस कार्यक्रम यथा 12-14 मार्च 2022 के दौरान "कृषि अपशिष्ट के मुद्रीकरण के माध्यम से उद्यमिता विकास" विषय पर किसान मेला 2022 ("पूर्वी क्षेत्र के लिए क्षेत्रीय कृषि मेला") तथा विद्वत समीक्षा - पीआरटी (पीयर रिव्यू टीम) के दौरे का सफल आयोजन किया गया।

भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री एम. वेंकैया नायडू जी का 7 नवंबर 2021 को आयोजित दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में स्वागत करना हमारे लिए गर्व और सम्मान की बात रही साथ हीं केंद्र एवं राज्य के अन्य गणमान्य व्यक्तियों, श्री फागू चौहान, माननीय राज्यपाल,बिहार, श्री नीतीश कुमार, माननीय मुख्यमंत्री, बिहार, श्रीमती रेणु देवी, माननीय उपमुख्यमंत्री, बिहार, माननीय राज्य कृषि मंत्री, बिहार, माननीय राज्य गन्ना मंत्री, बिहार, स्थानीय विधायक, और श्री राधा मोहन सिंह, माननीय सांसद, पूर्वी चंपारण के साथ डॉ. टी. महापात्र, सचिव, कृषि शिक्षा एवं अनुसन्धान विभाग और महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प नई दिल्ली का स्वागत करना भी हम सबके के लिए हर्ष और सम्मान का विषय रहा। इसी कड़ी में एक और सम्मानित क्षण तब आया, जब हमने पटना में, 23-25 नवंबर 2021को इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीकल्चरल इंजीनियर्स के 55वें वार्षिक सम्मेलन इंटरनेशनल सिम्पोजियम के उद्घाटन समारोह में श्री तारकिशोर प्रसाद, माननीय उपमुख्यमंत्री, बिहार सरकार और श्री अमरेंद्र प्रताप सिंह, माननीय कृषि मंत्री, बिहार सरकार की मेजबानी की।

इस अवधि के दौरान विश्वविद्यालय ने कई उपलब्धियां यथा नए शैक्षणिक पाठ्यक्रम, अकादमिक भर्तियां, और ऑनलाइन शैक्षणिक गतिविधियों को सफलतापूर्वक पूरा करना, वार्षिक परीक्षाओं का ससमय आयोजन एवं परिणामो की घोषणा, रोजगार-उन्मुख कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रमों का ससमय आयोजन आदि हासिल किया हैं। हमारी छात्र संख्या में 27 राज्यों से छात्र प्रतिनिधित्व के साथ उल्लेखनीय वृद्धि भी हुई है। छात्रों ने अच्छे प्लेसमेंट के अतिरिक्त देश-विदेश के प्रतिष्ठित संस्थानों की पीजी प्रवेश परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। जलवायु परिवर्तन की उभरती स्थिति से निपटने के लिए प्रौद्योगिकी विकास के हमारे प्रयासों ने जलवायु-अनुकूल फसल प्रणाली, भूजल पुनर्भरण, और धान के पुआल-आधारित मशरुम की खेती के लिए प्रौद्योगिकी का विकास किया है। हमारे शोध कार्यक्रम को एक अंतःविषय दृष्टिकोण के साथ और अधिक समाधान उन्मुख बनाने के लिए, जल प्रबंधन, जलवायु परिवर्तन, खाद्य प्रसंस्करण, और अपशिष्ट प्रबंधन जैसी समस्याओं से निपटने के लिए नए शोध केंद्र स्थापित किए गए हैं। हमारे प्रयासों और सफलताओं को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अच्छी तरह से पहचाना और सराहा गया है। विश्वविद्यालय ने अकादमिक और अनुसंधान उत्कृष्टता के लिए विभिन्न समाजों / संघों और संगठनों के विभिन्न स्तरों (16 अंतर्राष्ट्रीय, 77 राष्ट्रीय और 01 राज्य स्तर) के कुल 94 पुरस्कार प्राप्त किए हैं।

मैं भारत के माननीय राष्ट्रपति, महामहिम श्री रामनाथ कोविंद जी, विश्वविद्यालय के कुलाध्यक्ष; डॉ . नरेंद्र सिंह तोमर जी, माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार, श्री. कैलाश चौधरी, माननीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री, भारत सरकार और श्री. पुरुषोत्तम रुपाला , माननीय पंचायती राज राज्य मंत्री, कृषि और किसान कल्याण, भारत सरकार सहित प्रो. पी. के. मिश्र, विश्वविद्यालय के माननीय कुलाधिपति को उनके निर्बाध समर्थन और मार्गदर्शन के लिए सादर धन्यवाद् प्रकट करता हूँ मैं डॉ. टी.महापात्रा, सचिव, कृषि शिक्षा एवं अनुसन्धान विभाग, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार को भी उनके प्रोत्साहन और समर्थन के लिए बहुत -बहुत धन्यवाद देता हूँ।

मैं वार्षिक प्रतिवेदन हेतु बहुमूल्य जानकारी प्रदान करने के लिए विश्वविद्यालय के सभी अधिष्ठाताओं, निदेशकों, कुलसचिव, विभागों के प्रमुख, परियोजनाओं के निदेशकों, कृषि विज्ञान केन्द्रों के प्रमुख, वैज्ञानिकों / शिक्षकों और अन्य प्रशासनिक, तकनीकी और सहायक कर्मचारियों को बधाई देता हूँ। मैं वार्षिक रिपोर्ट 2020-21 की समय पर तैयारी और प्रकाशन के लिए विश्वविद्यालय प्रकाशन विभाग को भी बधाई देता हूँ।

डॉ. रमेश चन्द्र श्रीवास्तव

कुलपति

गौरवान्वित क्षण

आजादी के 75 वें वर्ष में जब हमारा देश "आजादी का अमृत महोत्सव" मना रहा है, डॉ. रा. प्र. के. कृ. वि., पूसा ने अपने उपलब्धियों में एक और उपलब्धि जोड़ी जब विश्वविद्यालय द्वारा परिकल्पित और परिचालित मधुबनी जिले के सुखेत मॉडल का उल्लेख माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के द्वारा "मन की बात" कार्यक्रम के 80वें संस्करण में रविवार 29 अगस्त 2021 को सुबह 11.00 बजे राष्ट्र के नाम संबोधन में किया किया गया । सुखेत के अपशिष्ट प्रबंधन मॉडल के कार्यप्रवाह से प्रभावित होकर माननीय प्रधान मंत्री जी ने, देश की प्रत्येक पंचायत में इसे दोहराने की आवश्यकता पर बल दिया। माननीय प्रधान मंत्री का उद्धरण-यहां प्रस्तुत किया गया है।

साथियो, मेरे सामने एक उदाहरण बिहार के मधुबनी से आया है। मधुबनी में डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद कृषि विश्वविद्यालय और वहाँ के स्थानीय कृषि विज्ञान केंद्र ने मिलकर के एक अच्छा प्रयास किया है। इसका लाभ किसानों को तो हो ही रहा है, इससे स्वच्छ भारत अभियान को भी नई ताकत मिल रही है। विश्वविद्यालय की इस पहल का नाम है – "सुखेत मॉडल" सुखेत मॉडल का मकसद है गाँवों में प्रदूषण को कम करना। इस मॉडल के तहत गाँव के किसानों से गोबर और खेतों–घरों से निकलने वाला अन्य कचरा इकट्ठा किया जाता है और बदले में गाँव वालों को रसोई गैस सिलेंडर के लिए पैसे दिये जाते हैं। जो कचरा गाँव से एकत्रित होता है उसके निपटारे के लिए वर्मीकम्पोस्ट बनाने का भी काम किया जा रहा है। यानी सुखेत मॉडल के चार लाभ तो सीधे-सीधे नजर आते हैं। एक तो गाँव को प्रदूषण से मुक्ति, दूसरा गाँव को गन्दगी से मुक्ति, तीसरा गाँव वालों को रसोई गैस सिलेंडर के लिए पैसे और चौथा गाँव के किसानों को जैविक खाद। आप सोचिए, इस तरह के प्रयास हमारे गाँवों की शक्ति कितनी ज्यादा बढ़ा सकते हैं। यही तो आत्मनिर्भरता का विषय है। मैं देश की प्रत्येक पंचायत से कहूंगा कि ऐसा कुछ करने का वो भी अपने यहाँ जरूर सोचें। और साथियो, जब हम एक लक्ष्य लेकर निकल पड़ते हैं न तो नतीजों का मिलना निश्चित होता है।"

शिक्षा, अनुसंधान और विस्तार में उत्कृष्टता के लिए विश्वविद्यालय को प्रदान किए गए सम्मानों की एक श्रृंखला के कुछ बहुत ही प्रमुख सम्मान।

सुखेत मॉडल पर डाक टिकट जारी

भारतीय डाक, संचार मंत्रालय, भारत सरकार ने 24 फरवरी 2022 को विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सुखेत मॉडल पर प्रथम दिवस कवर और डाक टिकट जारी किया।

द्वितीय दीक्षांत समारोह 7 नवम्बर, 2021 डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय का द्वितीय दीक्षांत समारोह 7 नवंबर 2021 को पंडित दीनदयाल उपाध्याय उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय परिसर, पिपराकोठी में आयोजित किया गया। कुल 291 स्नातक, 412 परास्नातक, और 35 पी.एच.डी. के छात्र-छात्राओं को विश्वविद्यालय के इस दीक्षांत समारोह में डिग्रिया प्रदान की गई। विश्वविद्यालय द्वारा महाविद्यालय और विश्वविद्यालय स्तरों पर संबंधित विभागों के स्नातकोत्तर और स्नातक छात्रों के टॉपर्स को 40 स्वर्ण पदक भी प्रदान किए गये। दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि भारत के माननीय उप-राष्ट्रपति श्री एम वेंकैया नायडू जी थे। इस अवसर पर श्री फागू चौहान, माननीय राज्यपाल, बिहार, श्री नीतीश कुमार, माननीय मुख्यमंत्री, बिहार सरकार, श्रीमती. रेणु देवी, माननीय उपमुख्यमंत्री, बिहार सरकार, श्री राधा मोहन सिंह, माननीय सांसद, पूर्वी चंपारण, डॉ. त्रिलोचन महापात्रा, सचिव, डेयर और महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प. सहित कई अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि,

माननीय उप-राष्ट्रपति श्री वेंकैया नायडू जी ने अपने संबोधन में कहा कि, कृषि भारत की मूल संस्कृति और भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। उन्होंने कृषि और संबद्ध विषयों के क्षेत्र में हुई वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति की सराहना की। उन्होंने समाज के कल्याण के लिए विश्वविद्यालय के योगदान की सराहना की और कृषि शिक्षा, अनुसंधान और उद्यमिता में उत्कृष्टता हासिल करने पर बल दिया। उन्होंने बढ़ती जनसंख्या वृद्धि, उसकी पोषण सुरक्षा और खाद्य गुणवत्ता की लगातार बढ़ती समस्याओं और चुनौतियों के समाधान की दिशा में कार्य करने की अपील की। माननीय उप-राष्ट्रपति जी ने केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं पर भी प्रकाश डाला, जो निरंतर कृषि और कृषक समुदायों की आय और आजीविका को बढ़ाने के उद्देश्य से चलाये जा रहे हैं। सभा को संबोधित करते हुए माननीय मुख्यमंत्री, बिहार सरकार, श्री नीतीश कुमार ने डिग्री प्राप्त करने छात्रों वाले को बधाई दी और विश्वविद्यालय की उपलब्धियों की प्रशंसा की। उन्होंने विश्वविद्यालय को शैक्षणिक और अनुसंधान उत्कृष्टता प्राप्त करने और राज्य के किसानों की आय बढ़ाने के प्रयासों में हर मोड़ पर समर्थन देने का आश्वासन भी दिया।

द्वितीय दीक्षांत समारोह में उपस्थित महानुभावगण

सचिव डेयर तथा महानिदेशक, भा.कृ.अनु.प, नई दिल्ली का विश्वविद्यालय में आगमन

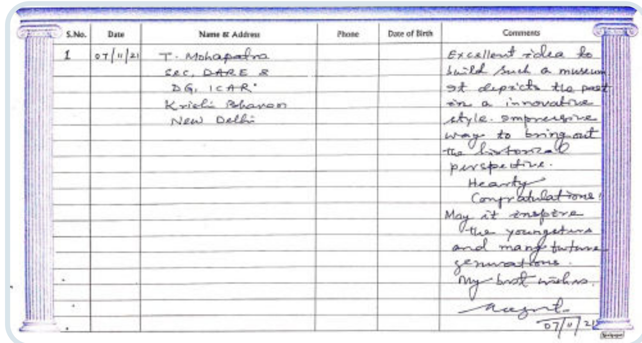

S.No.	Date	Name & Address	Phone	Date of Birth	Comments
1	07/11/21	T. Mohapatra Secy. DARE & DG, ICAR Krishi Bhawan New Delhi			Excellent idea to build such a museum. It depicts the past in a innovative style. Impressive way to bring out the historical perspective. Hearty Congratulations! May it inspire the youngsters and many future generations. My best wishes. 07/11/21

माननीय सचिव डेयर एवं भा.कृ.अनु.प के महानिदेशक, डॉ टी. महापात्र ने विश्वविद्यालय परिसर का दौरा किया। उन्होंने ढोली में बालिका छात्रावास का उद्घाटन किया तथा दो छात्रावास और एक व्याख्यान थिएटर परिसर के साथ-साथ विश्वविद्यालय अस्पताल की आधारशिला भी रखी। इसके अलावा उन्होंने मत्स्यकी महाविद्यालय, ढोली , कृषि व्यवसाय एवं ग्रामीण प्रबंधन संस्थान और विरासत संग्रहालय (हेरिटेज म्यूजियम) का भी दौरा किया। तत्पश्चात उन्होंने रा.प्र.के.कृ.वि. के संकाय सदस्यों को भी संबोधित किया।

इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीकल्चरल इंजीनियर्स का 55वां वार्षिक सम्मेलन और अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

❖ इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीकल्चरल इंजीनियर्स का 55वां वार्षिक सम्मेलन और अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का सफलतापूर्वक आयोजन पटना (बिहार) में 23-25 नवंबर 2021 के दौरान कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय, रा.प्र.के.कृ.वि.,पूसा, इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीकल्चरल इंजीनियर्स और बामेती (BAMETI) द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि श्री तारकिशोर प्रसाद, माननीय उप-मुख्यमंत्री, बिहार सरकार, थे। उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में, कृषि क्षेत्र में अधिक रोजगार पैदा करने और कृषि उत्पादकता बढ़ाने के लिए राज्य में कृषि यांत्रिकी और कृषि मशीनीकरण के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रमों को तैयार करने पर जोर दिया। श्री अमरेन्द्र प्रताप सिंह, माननीय कृषि मंत्री, बिहार सरकार, ने विशिष्ट अतिथि के रूप में अपने विचार साझा करते हुए कहा कि, राज्य सरकार बिहार में ऐसे और महाविद्यालय और इंजीनियरिंग लैब/वर्कशॉप स्थापित करके कृषि अभियांत्रिकी शिक्षा में सुधार के लिए गंभीर है। डॉ. आर. सी. श्रीवास्तव, माननीय कुलपति, रा. प्र. के. कृ. वि.,पूसा ने कृषि क्षेत्र के आधुनिकीकरण में कृषि अभियंताओं की भूमिकाओं और कार्यों की व्याख्या की और - "कुशल खेती के लिए कृषि अभियंताओं की उपयोगिता" विषय पर अपना विचार व्यक्त किया।

❖ हम कौन हैं?

वर्ष 2016 में स्थापित हम डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, भारतवर्ष में संगठित कृषि शिक्षा, कृषि अनुसन्धान और कृषि विस्तार की अत्यंत समृद्ध विरासत तथा संगठित कृषि शिक्षा की जननी है जो इस बात से परिलक्षित होता है कि, सन 1905 में लार्ड कर्ज़न के द्वारा हमें "कृषि अनुसन्धान संस्थान और महाविद्यालय" के रूप में इस दृष्टिकोण के साथ स्थापित किया गया था कि पूसा, कृषि क्रियाकलापों, अनुसंधान और शिक्षा का केंद्र बनेगा जो न केवल बिहार, बंगाल बल्कि समस्त भारत (तत्कालीन ब्रिटिश भारत) एवं विश्व के सर्वोत्तम प्रतिभाओं को आकर्षित एवं लाभान्वित करेगा। तदोपरांत यह संस्थान विकास की अनेक सीढियाँ चढ़ चुका है। यह हमारे गौरवशाली अतीत में भी देखा जा सकता है, जिसमें संस्थापकों ने स्नातक और परास्नातक डिप्लोमा कार्यक्रमों और गन्ना शोध संस्थान की स्थापना के माध्यम से कृषि में उच्च गुणवत्ता की शिक्षा और अनुसंधान प्रदान करने की कल्पना की।

❖ हम क्या करते हैं?

डॉ. रा. प्र. के. कृ. वि. पूसा में, हम कृषि जगत से जुड़े समस्त हितधारकों ,छात्रों और किसानों को उच्च गुणवत्ता वाली कृषि शिक्षा, अनुसंधान और कृषि विस्तार सेवाओं को प्रदान करते हैं तथा स्वास्थ्य, शिक्षा और आर्थिक कल्याण में उनकी निरंतर बेहतरी और सशक्तिकरण के लिए कार्य करते हैं। इन दिशाओं में हमारे सतत प्रयासों के फलस्वरूप इस विश्वविद्यालय ने कई शिक्षकों, प्रशासकों, नीति नियोजकों को जन्म दिया जो देश के अनेक शैक्षिक एवं अनुसंधान संगठनों, सरकारी विभागों, बैंकों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों आदि में विभिन्न पदों पर कार्यरत हैं। हमारे अनुसंधान और कृषि विस्तार कार्यक्रमों ने किसानों, विज्ञान और कृषि व्यवसाय के अन्य हितधारकों को न केवल बिहार में बल्कि पूरे भारत में बहुत लाभान्वित किया है। जो हमारे अनुभवी शिक्षकों, वैज्ञानिकों, तकनीकी, प्रशासनिक एवं सहायक कर्मचारियों के ठोस प्रयासों से हीं संभव हो पाया है।

❖ आप को इस विश्वविद्यालय से क्यों जुड़ना चाहिए?

क्योंकि, हम पूर्वी भारत में कृषि शिक्षा,अनुसन्धान एवं कृषि विस्तार में सर्वश्रेष्ठ हैं एवं विश्वविद्यालय में विशिष्ट समस्याओं के लिए समर्पित ग्यारह अनुसंधान केंद्रों/संस्थानों के अलावा आठ विषयिक महाविद्यालय भी हैं जो कि इस प्रकार हैं- तिरहुत कृषि महाविद्यालय, ढोली, कृषि परास्नातक महाविद्यालय,पूसा; कृषि अभियंत्रण महाविद्यालय, पूसा; आधार विज्ञान और मानविकी संकाय, पूसा; सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय, पूसा; मतस्यकी महाविद्यालय ढोली, उद्यान एवं वानिकी महाविद्यालय, पीपराकोठी तथा कृषि व्यवसाय एवं ग्रामीण प्रबंधन महाविद्यालय, पूसा;। हमारा विश्वविद्यालय परिसर गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक, अनुसंधान एवं कृषि विस्तार की गतिविधियों को आगे बढ़ाने के लिए शांत, सुरम्य एवं वृक्षों से आच्छादित हरे-भरे वातावरण में अवस्थित है। हमारे पास उत्कृष्ट बुनियादी सुविधाओं के अलावा शिक्षाविदों, वैज्ञानिकों, प्रशासकों और तकनीशियनों की समर्पित टीम है जो विश्वविद्यालय के उत्थान के प्रति अपने सेवाओं का निर्वहन कर रही है। प्रयोगशालाएं, डिजिटल सेंट्रल लाइब्रेरी, स्मार्ट क्लासरूम, एरिस सेल, प्लेसमेंट सेल, केवीके नेटवर्क, छत्रावास, अतिथि भवन, ऑडिटोरियम, खेलकूद कॉम्प्लेक्स, जिम और अन्य आईटी सक्षम सेवाएं समर्थन प्रणाली के रूप में कार्य कर रही हैं। हम परिसर को रहने का बेहतर स्थान बनाने के लिए नए बुनियादी ढांचे को जोड़ने और सुधारने की प्रक्रिया में हैं। सम्पूर्ण भारत से छात्रो के प्रवेश, संकायों और आधारभूत सुविधाओं के विकास, उनकी मांग एवं आपूर्ति इत्यादि के लिए किये गए हमारे सभी कार्यों से हमारा समर्पण, दृढ़ इच्छा शक्ति और संकल्प प्रदर्शित होता है, अतः आप को इस विश्वविद्यालय से जुड़ना चाहिए।

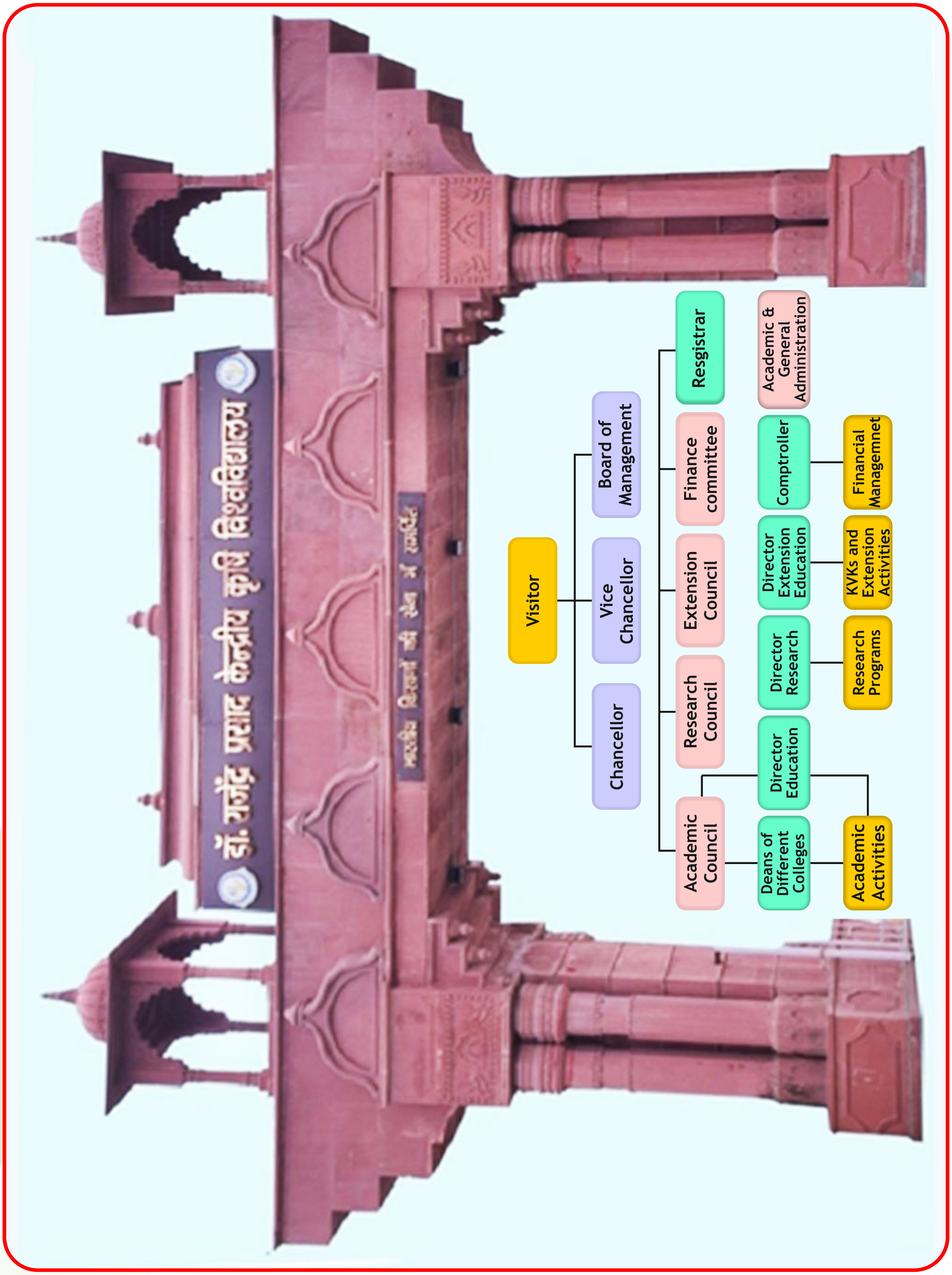
डॉ. राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
Visitor
Chancellor
Vice Chancellor
Board of Management
Academic Council
Research Council
Extension Council
Finance committee
Resgistrar
Deans of Different Colleges
Director Education
Director Research
Director Extension Education
Comptroller
Academic & General Administration
Academic Activities
Research Programs
KVKs and Extension Activities
Financial Managemnet

कार्यकारी सारांश

ऑनलाइन शिक्षण एवं पाठ्य सामग्री निर्माण, वितरण और शिक्षण संसाधनों तक आसन पहुंच तथा पिछले कोविड महामारी के दौरान प्राप्त अनुभव ऑनलाइन शैक्षणिक गतिविधियों के विस्तार में बहुत मदद करते हैं। हमारे शिक्षकों/वैज्ञानिकों और छात्रों ने इस नए वातावरण को बेहतर ढंग से आत्मसात किया और निर्धारित संसाधनों और समय के भीतर सभी शैक्षणिक और अनुसंधान गतिविधियों को ऑनलाइन पूरा किया।

इस वर्ष विश्वविद्यालय ने अपना दूसरा दीक्षांत समारोह आयोजित किया जिसमें स्नातक, परास्नातक और पीएच.डी. के 738 छात्रों को डिग्रिया प्रदान किया गया। साथ हीं, 40 छात्रों को उनकी अकादमिक उत्कृष्टता के लिए स्वर्ण पदक प्रदान किया गया। विगत वर्ष में विश्वविद्यालय ने शिक्षण, अनुसंधान, प्रसार और प्रशासन के क्षेत्र में सर्वांगीण विकास किया है। कृषि और संबद्ध क्षेत्रों के लिए गुणवत्तापूर्ण जनशक्ति की उपलब्धता के लिए राष्ट्रिय शिक्षा निति-2020 के अनुरूप स्नातक, परास्नातक, पीएच.डी, पीजी डिप्लोमा और सर्टिफिकेट कोर्स के रूप में पंद्रह नए पाठ्यक्रम शुरू किए गए हैं। छात्रों के संचार और सॉफ्ट स्किल्स को रोजगारोन्मुख बनाने हेतु तीन विदेशी भाषाओं के पाठ्यक्रम शुरू किए गए हैं और सॉफ्ट स्किल्स प्रशिक्षण भी आयोजित किए गए। विश्वविद्यालय में भारत के 27 राज्यों के कुल 687 छात्रों ने प्रवेश लिया और पिछले वर्ष के दाखिले में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की, जो विश्वविद्यालय की अखिल भारतीय उपस्थिति को दर्शाता है। इस वर्ष विश्वविद्यालय के 125 छात्रों ने विभिन्न राष्ट्रीय स्तर की परीक्षाओं जैसे एस.आर.एफ /जे.आर.एफ/ गेट/यूजीसी नेट और राष्ट्रीय फैलोशिप आदि में सफलता प्राप्त की।

विगत वर्ष में विश्वविद्यालय के पास विभिन्न फसलों और विषयों पर 149 शोध परियोजनाएं थीं जिनमे सात परियोजनाएं बाह्य एजेंसियों द्वारा तथा शेष राष्ट्रीय एजेंसियों द्वारा वित्त पोषित थीं। संकाय सदस्यों और छात्रों ने परास्नातक और पीएच.डी स्तर पर न केवल अच्छी संख्या में वैज्ञानिक शोध पत्र, पुस्तकें और पुस्तक अध्याय, तकनीकी बुलेटिन और शोध प्रबंध प्रकाशित किये, बल्कि गेहूं, मक्का, गन्ना जैसी विभिन्न फसलों की कई उत्तम किस्में भी विकसित की। अरहर, मडुआ, लहसुन, परवल, अरवी, शकरकंद और मिश्रीकंद की नवीन किस्मो का सीवीआरसी/एसवीआरसी के माध्यम से जारी करने हेतु अनुमोदित भी करवाया। विश्वविद्यालय में भिण्डी कटाई, फसलों और फसलों के अवशेषों से मूल्य वर्धित उत्पादों के लिए आशाजनक तकनीकों का विकास किया गया और अपशिष्ट प्रबंधन से आत्मनिर्भरता हेतु सुखेत मॉडल को विकसित किया गया है। इसके अलावा, विश्वविद्यालय ने अपनी दो प्रौद्योगिकियों का पेटेंट कराया है और नवीन प्रौद्योगिकियों और उत्पादों के लिए आठ पेटेंट आवेदन आवेदित किए हैं। विभिन्न समाजों/संघों और संगठनों के विभिन्न स्तरों (16 अंतर्राष्ट्रीय, 77 राष्ट्रीय और 01 राज्य स्तर) के कुल 94 पुरस्कार संकाय/वैज्ञानिकों को उनकी अकादमिक और अनुसंधान उत्कृष्टता के लिए प्राप्त हुए।

किसानों की आय बढ़ाने और विश्वविद्यालय द्वारा विकसित किसान अनुकूल प्रौद्योगिकियों, उत्पादों और सेवाओं को प्रदर्शित करने और उन्हें किसानों को हस्तांतरित करने के लिए विश्वविद्यालय ने कई किसान मेले, एफ.एल.डी, ओ.एफ.टी, प्रशिक्षण कार्यक्रम आदि आयोजित किए, जिसमें दस हजार पांच सौ से अधिक किसान भाइयों ने भाग लिया और वैज्ञानिक खेती एवं अपशिष्ट प्रबंधन के समृद्ध ज्ञान से लाभान्वित हुए। जलवायु परिवर्तन, खाद्य प्रसंस्करण और पोषण, जल प्रबंधन, अपशिष्ट प्रबंधन, मशरूम उत्पादन, और स्टार्ट अप सुविधा केंद्र जैसे समकालीन और चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में उत्कृष्टता के छह केन्द्रों द्वारा, कृषक-केंद्रित अनुसंधान, नवाचार और प्रशिक्षण का आयोजन किया गया।

विश्वविद्यालय ने 288 शिक्षकों एवं कर्मचारियों की भर्ती तथा पदोन्नति (23 शिक्षकों/ वैज्ञानिकों, 03 तकनीकी, 113 प्रशासनिक, 09 कुशल सहायक कर्मचारी की भर्ती एवं 111 शिक्षकों/ वैज्ञानिकों/कर्मचारियों, 25 प्रशासनिक और 04 सहायक कर्मचारी की पदोन्नति) करके शिक्षण और अनुसंधान की गुणवत्ता को उन्नत करने के लिए वैज्ञानिक एवं शिक्षण जनशक्ति संख्या को बढाया है। छात्रों और शिक्षकों के उन्नत शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य हेतु विश्वविद्यालय एक नया स्पोर्ट्स-कॉम्प्लेक्स / स्टेडियम विकसित कर रहा है। विदेशी छात्रों और विशेषज्ञों को आकर्षित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय अतिथि गृह का निर्माण भी प्रगति पर है। इन सभी कदमों ने वैज्ञानिक जनशक्ति और उनकी कार्यशक्ति को सक्रिय किया है जिसके परिणामस्वरूप विश्वविद्यालय ने 20.12 करोड़ रुपये का राजस्व अर्जित किया।

सरकार द्वारा कोविड महामारी को रोकने हेतु सुरक्षित दिशा-निर्देशों यथा थर्मल स्क्रीनिंग, मास्किंग, हैंड सैनिटाइजेशन, कैंपस सैनिटाइजेशन और सोशल डिस्टेंसिंग आदि को अपनाते हुए विश्वविद्यालय ने बहुत प्रभावी ढंग से दृढ संकल्पित एवं इस घातक महामारी पर पूर्ण नियंत्रण सुनिश्चित किया।

ये सारी उपलब्धियां विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय महत्व के वैज्ञानिक और अकादमिक नवाचारों के केंद्र के रूप में बनाने की दिशा में किये जा रहे हमारे अथक प्रयासों को दर्शाता है।

विश्वविद्यालय : एक परिचय

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय 1970 में स्थापित राजेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा तथा इससे भी पूर्व 1905 में स्थापित कृषि अनुसंधान संस्थान और महाविद्यालय की विरासत को संजोये हुए है। विश्वविद्यालय अपने अधिकार क्षेत्र और जिम्मेदारियों का विस्तार करते हुए कृषि और संबद्ध विज्ञान के विषयों में शिक्षण,अनुसंधान और प्रसार के क्षेत्र में सम्पूर्ण भारत में तथा विशेषकर गृह राज्य बिहार में अपनी सेवाओं का निर्वहन कर रहा है। विश्वविद्यालय की शैक्षणिक संरचना में 08 कॉलेज शामिल हैं। तिरहुत कृषि महाविद्यालय, ढोली; पी.जी कृषि महाविद्यालय, पूसा; कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय, पूसा; सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय, पूसा; आधार विज्ञान और मानविकी महाविद्यालय, पूसा; मत्स्यकी महाविद्यालय ढोली; और पं. दीन दयाल उपाध्याय उद्यानिकी और वानिकी महाविद्यालय, पीपराकोठी कृषि-व्यवसाय और ग्रामीण प्रबंधन विद्यालय शामिल है जिनमे कुल 228 वैज्ञानिक/शिक्षक कार्यरत है। विश्वविद्यालय में छह चीनी मिलों से जुड़े छह गन्ना परीक्षण केंद्रों के अलावा आठ बहु-विषयक अनुसंधान केंद्रों /संस्थानों और तीन क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्रों का नेटवर्क है। विश्वविद्यालय में 16 कृषि विज्ञान केन्द्रों और एक कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केंद्र (ए.टी.आई.सी) के माध्यम से विश्वविद्यालय के विकसित विभिन्न तकनीको एवं नवाचार को किसानो तक पहुचने का कार्य करता है।

❖ भाविष्यिक-दृष्टिकोण (Vision)

क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और वैश्विक आवश्यकताओं को पूरा करने और किसानों की आजीविका हेतु विशेष सेवाओं तथा नैतिक मूल्यों के साथ कृषि और सम्बंधित क्षेत्रों में शिक्षा, अनुसंधान और उद्यमिता में उत्कृष्टता हासिल करने के लिए पेशेवर योग्यता को आगे बढ़ाना।

❖ लक्ष्य (Mission)

- उच्च गुणवत्तापूर्ण अध्ययन के माहौल को बढ़ावा देते हुए एकीकृत दृष्टिकोण का निर्माण करना जो पर्यावरण और मृदा-वनस्पति-पशु-मानव के अंतरपटल की समझ को विकसित करता है।
- नवाचार-केंद्रित शिक्षा, अत्याधुनिक अनुसंधान, उद्यमिता / कौशल विकास चालू होना और उपयुक्त कृषि प्रौद्योगिकी के प्रसार के माध्यम से कृषि हितधारकों को आत्मनिर्भर तंत्र को आकार देना।
- अनुसंधान और विकास के अग्रिम हस्तक्षेपों के माध्यम से कृषि भूमि पर दबाव को कम करते हुए स्थायी खाद्य उत्पादन और सुरक्षा प्राप्त करने की राष्ट्रीय / वैश्विक आवश्यकताओं का पोषण करना।

❖ अधिदेश (Mandate)

- कृषि और संबद्ध विज्ञान की विभिन्न शाखाओं में शिक्षा प्रदान करना।
- कृषि और पशु उत्पादों की उत्पादकता और गुणवत्ता बढ़ाने के लिए उन्नत प्रौद्योगिकियों के लिए आधारभूत, रणनीतिक और उपयुक्त अनुसंधान करना।
- किसानों हेतु वैज्ञानिक जानकारी के प्रसार के लिए 'लैब टू लैंड' के दृष्टिकोण के साथ कार्य करना।
- आधार और प्रमाणित बीजों के उत्पादन और गुणन के लिए प्रजनक बीजों की आपूर्ति में राज्य सरकार की मदद करना।
- उद्योगों, गैर सरकारी संगठनों और अन्य लोगों को कृषि अनुसंधान और विकास में परामर्श सेवाएं और विशेषज्ञता प्रदान करना।

मुख्य उपलब्धियों की एक झलक

शिक्षण	➢ विश्वविद्यालय का द्वितीय दीक्षांत समारोह 7 नवंबर 2021 को पंडित दीनदयाल उपाध्याय उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय, पिपराकोठी में श्री एम. वेंकैया नायडू जी, भारत के माननीय उपराष्ट्रपति और बिहार राज्य के अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में आयोजित किया गया। ➢ कुल 738 छात्रों (291 स्नातक, 412 परास्नातक , और 35 पीएच.डी) को डिग्री से सम्मानित किया गया और 40 छात्रों को स्वर्ण पदक प्रदान किये गये। ➢ नई शिक्षा नीति (एनईपी)-2020 को लागू करने हेतु कृषि और संबद्ध विषय में गुणवत्तापूर्ण जनशक्ति बढ़ने के उद्देश्य से 15 नए पाठ्यक्रम (पीएचडी-03, परास्नातक -02, स्नातक-02, पीजी डिप्लोमा-03, सर्टिफिकेट कोर्स-05) शुरू किए गए ➢ राष्ट्रीय शिक्षा नीति की सिफारिशों के आलोक में (i) फार्म मैकेनाइजेशन असिस्टेंट, (ii) सीनियर सिटीजन असिस्टेंट, (iii) नर्सरी मैनेजमेंट असिस्टेंट, (iv) टिश्यू कल्चर लैब असिस्टेंट, और (v) आर्टिफिशियल इनसेमिनेशन एंड भ्रूण स्थानांतरण प्रौद्योगिकी सहायक जैसे कोर्सों की शुरुआत की गई। ➢ भारत के 27 विभिन्न राज्यों के कुल 687 (356 छात्र और 235 छात्राओं) विद्यार्थियों को स्नातक (384), परास्नातक (261) और पीएच.डी (42) पाठ्यक्रमो में प्रवेश दिया गया है। ➢ बी.एस.एम.ए कमेटी की नई सिफारिशें 2021-22 बैच से लागू की गई। ➢ विभिन्न समाजों/संघों और संगठनों के विभिन्न स्तरों (16 अंतर्राष्ट्रीय, 77 राष्ट्रीय और 01 राज्य स्तर) के कुल 94 पुरस्कार वैज्ञानिकों को उनके अकादमिक और अनुसंधान उत्कृष्टता के लिए प्राप्त हुए। ➢ 125 छात्रों ने राष्ट्रीय स्तर की परीक्षाओं जैसे एस.आर. एफ (10), जे.आर.एफ (20), नेट (64), गेट (14), कैट (02), सरकारी नौकरी (18) में सफलता प्राप्त की। ➢ लगभग 33.13% छात्रों को COVID-19 महामारी के बावजूद कैंपस प्लेसमेंट के तहत नौकरी मिली।
अनुसंधान	➢ विश्वविद्यालय द्वारा परिकल्पित और परिचालित मधुबनी जिले के सुखेत मॉडल को भारत के माननीय प्रधान मंत्री जी के "मन की बात" के 80 वें संस्करण में उल्लेखित होने की वजह से राष्ट्रीय पहचान मिली। ➢ माननीय राज्यपाल, बिहार की गरिमामयी उपस्थिति में दिनांक 24/02/2022 को सुखेत मॉडल पर भारतीय डाक द्वारा प्रथम दिवस कवर और स्टाम्प जारी किया गया। ➢ विभिन्न फसलों की 22 किस्मों का विमोचन किया गया। ➢ 36 उन्नत प्रौद्योगिकियों और मूल्य वर्धित उत्पादों का विकास किया गया। ➢ कुल 560 शोध प्रकाशन (447 शोध लेख, 12 पुस्तकें, 40 पुस्तक अध्याय, 30 प्रशिक्षण नियमावली, 04 नीति पत्र, 05 तकनीकी बुलेटिन, 13 शोध बुलेटिन) प्रकाशित किये गए। ➢ नवीन प्रौद्योगिकियों और मूल्य वर्धित उत्पादों के लिए 02 पेटेंट प्राप्त किए गए तथा 03 लाइसेंस प्राप्त किये गये और 08 पेटेंट का आवेदन किया गया। ➢ पटना (बिहार) में 23-25 नवंबर, 2021 के दौरान कृषि अभियांत्रिकी तथा प्राद्यौगिकी (रा.प्र.के.कृ.वि.) द्वारा इंडियन सोसाइटी ऑफ एग्रीकल्चरल इंजीनियर्स के 55वें वार्षिक सम्मेलन और अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया था।
कृषि प्रसार	➢ 44 किसान मेलो का आयोजन किया गया - (एक मुख्य परिसर में और शेष विभिन्न कृषि विज्ञान केन्द्रों में) ➢ 127 रेडियो/टीवी वार्ता की गयी। ➢ 1916 एफ.एल.डी, 23267 एफ.सी. एस और 2026 किसान प्रशिक्षण आयोजित किया गया। ➢ 160 प्रौद्योगिकी मूल्यांकन परीक्षण आयोजित किए गए। ➢ 80 विस्तार ज्ञान कियोस्क विकसित किया गया। ➢ वर्चुअल मोड में 64 ई-किसान चौपाल का आयोजन किया गया। ➢ विभिन्न प्रशिक्षणों और किसान मेला से 10,578 किसान लाभान्वित हुए। ➢ सभी कृषि विज्ञान केंद्र के फार्म की 5 एचपी सबमर्सिबल पंपों से सिंचाई क्षमता की वृद्धि की गयी।
प्रशासनिक/आधारभूत संरचना	➢ कुल 288 कर्मचारियों/ अधिकारियो की भर्ती तथा पदोन्नति की गई जिसमें 140 (111 संकाय/वैज्ञानिक, 25 प्रशासनिक कर्मचारी, 04 सहायक कर्मचारी) की पद्योन्नति और 148 (23 संकाय/वैज्ञानिक, 03 तकनीकी कर्मचारी, 113 प्रशासनिक कर्मचारी और 09 कुशल सहायक कर्मचारी) की भर्ती की गयी। ➢ पांच नवनिर्मित/स्थापित सुविधाएं यथा, देशी गोवंश संरक्षण एवं संवर्धन केंद्र, माधोपुर; स्वदेशी गायो नस्ल की क्षेत्रीय उत्कर्ष केंद्र, पिपराकोठी; पंडित दीनदयाल उपाध्याय उद्यानिकी एवम वानिकी महाविद्यालय एवं गंडकी महिला छात्रवास एवं पंडित राजकुमार शुक्ल छत्रवास का उद्घाटन किया गया। ➢ विश्वविद्यालय की चार द्विभाषी वार्षिक रिपोर्ट (2016-17,2017-18,2018-19,2019-20) को विज़िटर से अनुमोदित कराया और डेयर के माध्यम से संसद में अनुमोदन के लिए प्रस्तुत किया गया। ➢ विश्वविद्यालय ने 20.12 करोड़ रुपये का राजस्व अर्जित किया। ➢ प्रकाशन प्रभाग ने 105 शोध प्रकाशनों, 253 प्रेस विज्ञप्तियों, 600 समाचारो को विभिन्न समाचार पत्रों में सफलतापूर्वक प्रकाशित किया और माननीय कुलपति और अन्य वैज्ञानिकों के 72 लाइव साक्षात्कार की व्यवस्था किया।

संगठनात्मक संरचना:

विश्वविद्यालय के कार्यकारी निकाय:

- प्रबंधक मंडल
- वित्त समिति
- शैक्षणिक परिषद
- अनुसंधान परिषद
- प्रसार शिक्षा परिषद

विश्वविद्यालय प्रशासन:

विजिटर	:	श्री रामनाथ कोविंद, भारत के माननीय राष्ट्रपति
कुलाधिपति	:	प्रो. पी. के. मिश्रा
कुलपति	:	डॉ. रमेश चंद्र श्रीवास्तव
कुलसचिव	:	डॉ. प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव
निदेशक शिक्षा	:	डॉ. एम.एन. झा
निदेशक अनुसंधान	:	डॉ. मिथिलेश कुमार एवं डॉ. एन. के. सिंह
निदेशक प्रसार शिक्षा	:	डॉ. एम.एस. कुंडू
विश्वविद्यालय पुस्तकालयाध्यक्ष	:	डॉ. राकेश मणि शर्मा
निदेशक छात्र कल्याण	:	डॉ. ए. के. मिश्रा एवं डॉ. रंजन लायक
नियंत्रक	:	श्री राधा कृष्ण प्रसाद, डॉ. एम्. कुमार एवं डॉ. के. एम्. सिंह

कॉलेज / संस्थानों के अधिष्ठाता / निदेशक:

डॉ. के.एम. सिंह	अधिष्ठाता, पी.जी कृषि महाविद्यालय
डॉ. सोमनाथ रॉय चौधरी	अधिष्ठाता, आधार विज्ञान और मानविकी महाविद्यालय
डॉ. (श्रीमती) मीरा सिंह	अधिष्ठाता, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय
डॉ. कृष्ण कुमार	अधिष्ठाता, पं. दी. द. उपा. उद्यानिकी और वानिकी महावि. (पिपराकोठी, मोतिहारी)
डॉ. अंबरीश कुमार	अधिष्ठाता, कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय
डॉ. प्रेम प्रकाश श्रीवास्तव	अधिष्ठाता, मत्स्यकी महाविद्यालय ढोली, मुजफ्फरपुर
डॉ. ए.के. सिंह	अधिष्ठाता, तिरहुत कृषि महाविद्यालय, ढोली, मुजफ्फरपुर
डॉ. ए.के. सिंह	निदेशक, गन्ना अनुसंधान संस्थान
डॉ. के. बी. रामप्पा	निदेशक, कृषि व्यवसाय और ग्रामीण प्रबंधन
डॉ. एस.के. जैन	निदेशक, भवन और अवसंरचना
डॉ. आर.एस. वर्मा	निदेशक, संयंत्र और सुविधाएं
डॉ. आरती सिन्हा	निदेशक, योजना

शिक्षा एवं शैक्षिक गतिविधियाँ

विश्वविद्यालय का प्रचार एवं प्रसार बढ़ाने के लिए, सेवारत छात्रों, विदेशी छात्रों और उद्योग प्रायोजित छात्रों के प्रवेश के लिए प्रावधान किया गया है और पी.जी, पी.एच.डी के नए सत्र (2021-22) में उनके प्रवेश के लिए पहले ही आवेदन आमंत्रित किया गया। विश्वविद्यालय ने कृषि और संबद्ध विषयों में उच्च योग्य मानव संसाधन विकसित करने के लिए हर संभव प्रयास किया है। विश्वविद्यालय ने दो विषयों टेक्सटाइल और कपडा; एवं बीज विज्ञान और प्रौद्योगिकी में नया परास्नातक कार्यक्रम तथा तीन विषयों खाद्य और पोषण; कृषि मशीनरी और पावर इंजीनियरिंग; एवं प्रसंस्करण और खाद्य इंजीनियरिंग में पीएच.डी कार्यक्रम शुरू किया है इसके अलावा कृषि-पर्यटन, कृषि पत्रकारिता और जन संचार और कृषि-वेयर हाउस प्रबंधन में पीजी डिप्लोमा, और फार्म मशीनीकरण के लिए सहायक, वरिष्ठ नागरिक सहायक, नर्सरी प्रबंधन सहायक, उत्तक संवर्धन (टिश्यू कल्चर) प्रयोगशाला सहायक, ए.आई. और ई.टी.टी. सहायक के लिए प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम शुरू करने का निर्णय भी लिया गया। इस प्रकार, विश्वविद्यालय में स्नातक कार्यक्रम के 6 विषयों में 407 छात्रों, स्नातकोत्तर कार्यक्रम के 26 विषयों में 294 छात्रों और पीएच.डी के 13 विषयों में 44 छात्रों को कुल प्रवेश दिया गया।

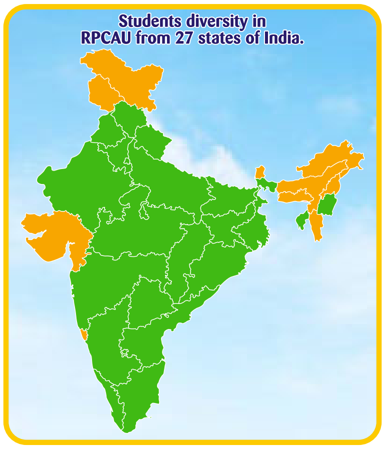

■ 27 राज्यों से छात्रों का प्रवेश

विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों के स्नातक, स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट कार्यक्रमों के लिए विदेशी भाषाओं पर तीन वैकल्पिक पाठ्यक्रम भी शुरू किए गए हैं। पहली बार, विश्वविद्यालय द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा निति-2020 की सिफारिश के अनुरूप पीजी डिप्लोमा और सर्टिफिकेट कोर्स की शुरुआत की गई। कृषि-भंडार प्रबंधन, कृषि पत्रकारिता और जनसंचार और कृषि पर्यटन में पर्यवेक्षी स्तर की नौकरियों के लिए प्रशिक्षित जनशक्ति की आवश्यकता को पूरा करने के लिए पीजी डिप्लोमा पाठ्यक्रम शुरू किए गए हैं। सर्टिफिकेट कोर्स प्राथमिक स्तर की नौकरियों जैसे नर्सरी प्रबंधन, प्लांट टिशू कल्चर, फार्म मैकेनाइजेशन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, भ्रूण स्थानांतरण तकनीक और वरिष्ठ नागरिक सहायता के लिए कुशल मानव संसाधन की आवश्यकता को पूरा करेंगे। पीजी डिप्लोमा प्रोग्राम और सर्टिफिकेट कोर्स की प्रवेश प्रक्रिया सफलतापूर्वक पूरी की गई और कुल 66 छात्रों ने विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश लिया।

विश्वविद्यालय ने अपने 8 कॉलेजों के नेटवर्क के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना जारी रखा है | इन सभी महाविद्यालयों में कुल 687 छात्रों ने दाखिला लिया (स्नातक -384, परास्नातक-261 और 42 पी.एच.डी में) और 346 छात्र पास आउट हुए और उन्हें स्नातक (89), परास्नातक (222), और पी.एच.डी (14) डिग्री से सम्मानित किया गया। विश्वविद्यालय के कुल 125 छात्रों ने विभिन्न राष्ट्रीय स्तर की परीक्षाओं जैसे एस.आर.एफ / जे.आर.एफ / गेट्स / यू.जी.सी नेट और राष्ट्रीय फैलोशिप आदि में सफलता प्राप्त की।

❖ डिग्री पुरस्कार विजेता छात्र

8वीं अकादमिक परिषद ने 28-10-2021 को अपनी बैठक में 01-10-2018 से 15-09-2021 के दौरान उत्तीर्ण छात्रों के लिए स्नातक, परास्नातक और पीएचडी डिग्री प्रदान करने का निर्णय लिया। 7 नवंबर 2021 को आयोजित विश्वविद्यालय के दूसरे दीक्षांत समारोह में भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री एम. वेंकैया नायडू जी के द्वारा कुल 738 छात्रों को डिग्री प्रदान की गई। और 40 टॉपर्स छात्रों ने स्वर्ण पदक प्राप्त किये।

विश्वविद्यालय ने शिक्षा और अनुसंधान में गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए अत्याधुनिक सुविधाओं और सेवाओं जैसे स्मार्ट क्लास, डिजिटल लाइब्रेरी, अच्छी तरह से सुसज्जित प्रयोगशालाओं, संकाय उन्नयन, क्षमता निर्माण और साहित्यिक चोरी विरोधी तंत्र के विकास के माध्यम से शैक्षणिक और अनुसंधान कार्य के लिए अनुकूल वातावरण बनाया है। एक केंद्रीकृत कैशलेस एकल खिड़की प्रवेश प्रक्रिया शुरू कर प्रवेश से लेकर परिणाम घोषणा तक के विभिन्न गतिविधियों के लिए एक प्रभावी निगरानी प्रणाली लागू की गई है। मानव संसाधन विकास के तहत शिक्षकों को वर्चुअल मोड में 146 सेमिनारों, 140 सम्मेलनों, 128 कार्यशालाओं और 85 प्रशिक्षणों में भाग लेने की अनुमति दी गई।

छात्र प्रवेश/पास आउट: एक नजर में

कार्यक्रम के नाम	प्रवेश क्षमता (2021-22)	प्रवेश लिए (2021-22)	उत्तीर्ण हुए (2021-22)
स्नातक	407	384	129
परास्नातक	294	261	202
पी.एच.डी.	44	42	15
कुल	745	687	346

प्लेसमेंट तथा नियुक्तियां

प्लेसमेंट सेल, डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर ने अपने अंतिम वर्ष के 33.12% छात्रों को देश की प्रतिष्ठित कंपनियों में रोजगार दिलवाया। उनमें से कुछ मैसर्स यारा फर्टिलाइजर्स लिमिटेड, मेसर्स नुजिवेदु सीड्स प्रा. लिमिटेड, मैसर्स रैलिस इंडिया लिमिटेड, मेसर्स वीएनआर सीड्स, रायपुर, छत्तीसगढ़, मेसर्स पीआईई इंफोकॉम, लखनऊ, मैसर्स इफको किसान कॉल सेंटर, पटना, मेसर्स कोरटेवा एग्रीसाइंस, बेंगलुरु, मेसर्स एग्रीन फार्मिंग प्राइवेट लिमिटेड, मैसर्स किसानप्रो एग्रो-टेक्नोलॉजी, रांची, मेसर्स एक्ज़िमेनिया ऑर्गेनिक वैली प्रा लिमिटेड, महाराष्ट्र, मेसर्स वीरबैक एनिमल हेल्थ इंडिया प्रा लिमिटेड, पटना, मेसर्स मदर डेयरी, नई दिल्ली इत्यादि में छात्रों को 4.83 लाख रुपये प्रति वर्ष औसतन के पैकेज के साथ नौकरी मिली।

प्लेसमेंट सेल ने सेवा (SEVWA) नई दिल्ली द्वारा दो दिनों के लिए 17-18.दिसंबर 2021 को "हाई इम्पैक्ट प्लेसमेंट रेडीनेस प्रोग्राम: कैंपस टू कॉरपोरेट" विषय पर सॉफ्ट स्किल ट्रेनिंग प्रोग्राम का भी आयोजन किया। इस कार्यक्रम में स्नातक और स्नातकोत्तर के अंतिम वर्ष के छात्रों ने भाग लिया, जिन्होंने इसे बहुत सफल बताया।

प्लेसमेंट रिकॉर्ड	
औसत पैकेज	Rs. 4.83 Lakh
उच्चतम पैकेज	Rs. 8.10 Lakh
कंपनियों की संख्या	14
प्रतीक्षारत विद्यार्थियों की संख्या	1
विद्यार्थियों की कुल संख्या	52

खंडवार प्लेसमेंट रिकॉर्ड :

क्रम संख्या	महाविद्यालय नाम	कुल विद्यार्थी	भाग लेने वाले विद्यार्थी	अंतिम चयन प्रतिशत	कोर्सवाइज	कुल प्रतिशत
1	MBA (Agribusiness)	34	29	11	37.93	**33.12**
2	MBA (Rural Management)	13	12	6	50.00	
3	B. Sc. (Agriculture)	50	38	11	28.95	
4	B. Tech. (Biotechnology)	18	6	0	0.00	
5	B. Sc. (Community Science)	23	1	1	100.00	
6	B. Tech. (Agriculture Engg.)	13	6	5	83.33	
7	B.F.Sc. (Fisheries)	21	9	4	44.44	
8	M.Sc. (Agriculture)	101	56	14	25.00	
9	M.Sc. (Fisheries)	10	0	0	0.00	
10	M.Sc. (Community Science)	18	0	0	0.00	
11	M.Tech (Agril. Engg)	13	0	0	0.00	
12	M.Tech (Bio-technology)	22	0	0	0.00	
	TOTAL	**336**	**157**	**52**	**33.12**	

अनुसन्धान

विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक जनशक्ति के साथ बेहतर प्रयोगशालाएं, पुस्तकालय तथा अनुसंधान के लिए अत्याधुनिक बुनियादी ढांचे को विकसित किया गया है। 149 अनुसंधान परियोजनाएं जिनमें 35अखिल भारतीय समन्वित अनुसन्धान परियोजनाएं, 4 अंतर्राष्ट्रीय परियोजनाएं, भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित 16 परियोजनाएं, बिहार सरकार द्वारा वित्त पोषित 6 परियोजनाएं, विश्वविद्यालय द्वारा 82 पोषित परियोजनाएं और 06 अन्य परियोजनाएं शामिल हैं, जिनका उद्देश्य उन्नत फसल किस्मों के विकास, किसानों की आय दुगुनी करने और उनकी आजीविका के लिए प्रधौगिकियों का विकास करना है।

क्रम स.	एन्जेंसियाँ	कुल परियोजना
1	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (समन्वित)	35
2	अंतरराष्ट्रीय	04
3	भारत सरकार प्रायोजित	16
4	बिहार सरकार प्रायोजित	06
5	विश्वविद्यालय प्रायोजित	82
6	अन्य	02

विकसित किस्में

विश्वविद्यालय की 10वीं अनुसंधान परिषद की बैठक में कंद की तीन नई किस्में राजेंद्र अरवी-2, शकरकंद राजेंद्र सकरकंद-7 और यम बीन की एक किस्म राजेंद्र मिश्रीकंद-3 के रूप में जारी करने हेतु सिफारिश की गई। 27.मई 2021 को सीवीआरसी द्वारा राजेंद्र गेहु-3, राजेंद्र अरहर-2 और राजेंद्र गन्ना-2 को अधिसूचित किया गया।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय द्वारा अनुशंसित निजी क्षेत्र की संकर चावल की किस्में

राजेन्द्र अरवी-2 राजेन्द्र शकरकंद-7 राजेन्द्र मिश्रीकंद -3

10वीं अनुसंधान परिषद् की बैठक में निजी क्षेत्र की दो संकर चावल किस्मों, शांति-1 (डेल्टा एग्री जेनेटिक्स प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद द्वारा विकसित) और अंकुर-7576 (अंकुर सीड्स प्राइवेट लिमिटेड, नागपुर, महाराष्ट्र द्वारा विकसित) को बिहार में जारी करने की सिफारिश की गई।

राजेंद्र परवल-3 IC-0640201

11वीं अनुसंधान परिषद की बैठक में पारंपरिक लौकी उगाने वाले क्षेत्रों और बिहार की दियारा भूमि के लिए राजेंद्र परवल-3 की नई किस्म जारी की गई। राजेंद्र परवल-3 ने नियंत्रक किस्में काशी अलंकार की तुलना में 17.37% का उच्च उपज प्रदर्शित किया। यह रोग और कीट के खिलाफ मध्यम प्रतिरोधी है।

गन्ने की किस्म राजेंद्र गन्ना-3

11वीं अनुसंधान परिषद की बैठक में गन्ने की अगेती किस्म राजेंद्र गन्ना -3 को जारी करने की सिफारिश की गई। इसमें उच्च चीनी सामग्री के साथ उच्च गन्ना उपज होने का गुण भी है। यह लाल सड़न के लिए प्रतिरोधी है और विल्ट और स्मट रोग के लिए मध्यम प्रतिरोधी है।

गन्ने की किस्म राजेंद्र गन्ना-4

मध्य-देर अवधि की गन्ना किस्म राजेंद्र गन्ना -4 जारी की गई जो लाल सड़न के खिलाफ प्रतिरोध और विल्ट और स्मट रोग के खिलाफ मध्यम प्रतिरोधी के रूप में अनुशंसित है।

प्रौद्योगिकियां/उत्पाद विकसित

1. सरसों में एफिड्स के प्रबंधन के लिए एक सुरक्षित कीटनाशक के रूप में याम बीन के बीज का अर्क
2. हैंड-क्रैंक्ड इम्प्रूव्ड चक्की
3. राजेंद्र मशरूम पनीर
4. राजेंद्र पूसा नमकीन मशरूम बिस्किट
5. राजेंद्र पूसा मशरूम गुलाब जामुन
6. राजेंद्र मशरूम सब्सट्रेट स्टरलाइज़र
7. मैनुअल गोभी कटाई मशीन
8. तुलसी (Ocimum Sanctum L.) में रोपण समय और फसल चक्र का मानकीकरण
9. नाव आधारित सौर फोटोवोल्टिक पंपिंग सिंचाई प्रणाली
10. विभिन्न मक्का-दाल आधारित अंतरफसलों के लिए सिंचाई और पोषक तत्व प्रबंधन
11. कम लागत वाली लीची आधारित मछली का चारा
12. भिंडी की कटाई के लिए हस्त उपकरण का विकास

अपनाई गयी तकनीकें एवं विकसित उपकरण

भिंडी की कटाई के लिए हस्त-उपकरण

11वीं अनुसंधान परिषद की बैठक में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय द्वारा भिंडी की कटाई के लिए एक हस्त उपकरण प्रदर्शित किया गया। प्रौद्योगिकी को कृषि महाविद्यालय में डिजाइन और विकसित किया गया है , जिसमें विशिष्ट विशेषताएं हैं जैसे- संचालन में आसानी, न्यूनतम हाथ की चोटें और कटाई की गई भिंडी की सेल्फ लाइफ बढ़ाना। इस उपकरण की क्षमता और लागत क्रमशः 13.64 किग्रा/घंटा और 200/- रुपये है।

कृषि अभियांत्रिकी एवं प्राद्यौगिकी महाविद्यालय ने अरहर के डंठल से बने दो प्रकार के साइड टेबल विकसित किए

कृषि अभियांत्रिकी एवं प्राद्यौगिकी महाविद्यालय ने अरहर के डंठल से बने दो प्रकार के साइड टेबल विकसित किए। साइड टेबल माननीय कुलपति को प्रस्तुत किया गया जिन्होंने इसकी सराहना की और इसी तरह के उत्पादों के लिए और शोध एवं नवाचार करने पर जोर दिया।

मीठे पानी की विशालकाय झींगा मछली पालने का उद्घाटन

डॉ. एल. मुरुगन, माननीय मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी राज्य मंत्री, भारत सरकार ने 24 अक्टूबर, 2021 को वर्चुअल मोड के माध्यम से मत्स्यकी महाविद्यालय , ढोली में मीठे पानी की विशालकाय झींगा मछली पालने का उद्घाटन किया।

गन्ना अनुसंधान संस्थान द्वारा संकर गन्ना बीज का उत्पादन

गन्ना अनुसंधान संस्थान, पूसा ने कोविड-19 महामारी की स्थिति में भी राष्ट्रीय संकरण उद्यान, गन्ना प्रजनन संस्थान, कोयंबटूर और गन्ना अनुसंधान संस्थान, पूसा में बनाए गए क्रास से प्राप्त फूल से पांच हजार से अधिक संकर गन्ने के पौधे तैयार किए हैं। संस्थान ने तीन प्रारंभिक किस्में (CoP21436, CoP21437 and CoP 21438) और एक मध्य-स्तर की किस्म (CoP21439) विकसित की है जो परीक्षण के चरण में हैं। इन किस्मों में उच्च सुक्रोज सामग्री के साथ अधिक उपज होती है। अखिल भारतीय समन्वित अनुसन्धान परियोजनाओं के परीक्षणों में उन्हें शामिल करने और राज्य के द्वारा रिलीज के लिए बीज गुणन का कार्य किया जा रहा है।

विश्वविद्यालय द्वारा विकसित हल्दी हार्वेस्टर का फील्ड परीक्षण

विश्वविद्यालय द्वारा वित्त पोषित परियोजना 'बुवाई और कटाई के विकास के माध्यम से हल्दी की फसल का मशीनीकरण' में कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय द्वारा विकसित हल्दी हार्वेस्टर को कृषि विज्ञान केंद्र बिरौली फार्म में फील्ड परीक्षण स्थितियों के तहत जांच किया गया। यह पाया गया की खेत में नगण्य मात्रा में क्षतिग्रस्त और अवशेष हल्दी कंद थे। हार्वेस्टर का खेत में प्रदर्शन उल्लेखनीय रूप से अच्छा रहा।

कम लागत वाली तरल जैव उर्वरक उत्पादन तकनीक

जैव उर्वरक उत्पादन इकाई, मृदा विज्ञान विभाग, तिरहुत कृषि महाविद्यालय, ढोली में ग्राम स्तर पर तरल जैव उर्वरक की कम लागत वाली उत्पादन तकनीक विकसित की गई है। इस तकनीक को अपनाकर ग्राम स्तर पर एक करोड़ रुपये की लागत से एक तरल जैव उर्वरक उत्पादन इकाई स्थापित की जा सकती है। प्रोद्योगिकी का प्रयोगशाला में परीक्षण किया गया जो क्षेत्र की परिस्थितियों के अनुरुप आशाजनक पाया गया है।

रा.प्र.के.कृ.वि. द्वारा बाढ़ निगरानी और फसल क्षति का आकलन

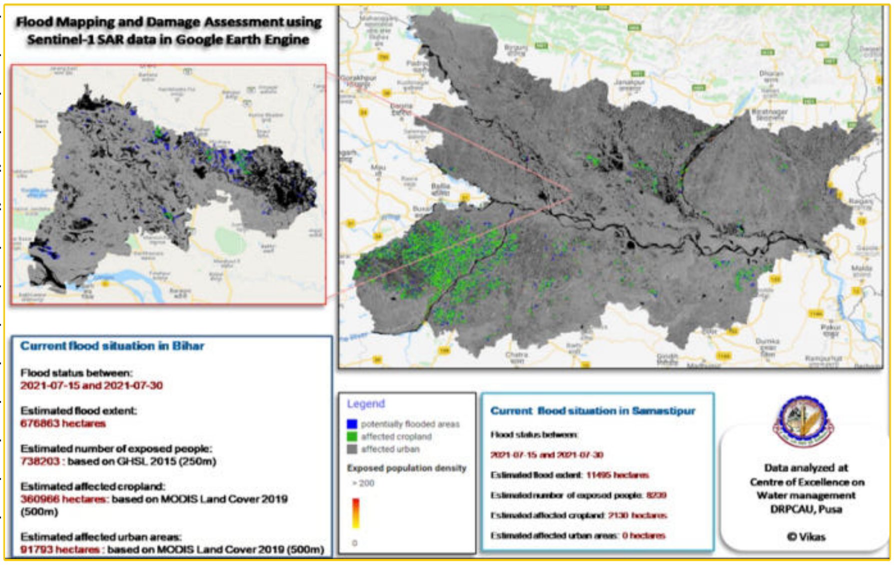

जल प्रबंधन पर उत्कृष्टता केंद्र ने पूरे बिहार में मौजूदा प्रारंभिक बाढ़ की स्थिति के लिए वर्तमान बाढ़ मानचित्रण और क्षति आकलन पर काम किया। इस उद्देश्य के लिए, केंद्र में हाल ही में विकसित भू-स्थानिक प्रयोगशाला में गूगल अर्थ इंजन प्लेटफॉर्म पर सेंटिनल-1 एसएआर इमेजरी का विश्लेषण किया गया। परिणामों से पता चला कि बिहार के कुल भौगोलिक क्षेत्र का लगभग 7.18% बाढ़ या जल भराव की स्थिति में है, जिससे 7 लाख से अधिक लोग प्रभावित हुए हैं। वर्तमान स्थिति में बिहार के 56.03 लाख हेक्टेयर शुद्ध खेती वाले क्षेत्र में से 3.61 लाख हेक्टेयर फसल भूमि और 0.9 लाख हेक्टेयर शहरी क्षेत्र भी शुरुआती बाढ़ से प्रभावित होते हैं।

आधारभूत संरचनाओं का विकास

पांच नवनिर्मित/स्थापित सुविधाएं-देशी गोवंश संरक्षण एवं संवर्धन केंद्र, माधोपुर; स्वदेशी गायो के नस्ल का क्षेत्रीय उत्कर्ष केंद्र, पिपराकोठी, पंडित दीनदयाल उपाध्याय उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय एवं गंडकी महिला छात्रावास और पंडित राजकुमार शुक्ल छात्रावास का उद्घाटन माननीय उपराष्ट्रपति जी द्वारा माननीय कुलपति और अन्य गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में पंडित दीनदयाल उपाध्याय उद्यानिकी एवं वानिकी महाविद्यालय, पिपराकोठी में आयोजित दूसरे दीक्षांत समारोह के अवसर पर किया गया।

समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

विश्वविद्यालय ने नीचे दिए गए विवरण के अनुसार कृषि उत्पादों और सेवाओं के विभिन्न क्षेत्रों के कृषि-उद्यमियों के साथ चार समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए हैं।

क्रम संख्या	कृषि-उद्यमियों के साथ समझौता	दिनांक	....हेतु समझौता किया गया
01	खादी संस्थान आशानुरुप लोक सेवा संस्थान, पटना	03-02-2022	विश्वविद्यालय उत्पादों का विपणन
02	देववती जैविक उद्यान, मुजफ्फरपुर	04-06-2022	जैविक खेती
03	डोक टी एंड एग्रो, पोठिया (बिहार)	04-06-2022	चाय और कृषि पर्यटन विकास
04	किस्लुनार जानकी प्रा. लिमिटेड पटना	04-06-2022	केला फाइबर आधारित सेनेटरी पैड

शोध प्रकाशन

कुल 560 शोध प्रकाशन (447 शोध लेख, 12 पुस्तकें, 40 पुस्तक अध्याय, 30 प्रशिक्षण नियमावली, 04 नीति पत्र, 05 तकनीकी बुलेटिन, 13 शोध बुलेटिन और 03 पेटेंट और 02 पेटेंट लाइसेंस) प्रकाशित किये गए साथ हीं 08 पेटेंट का रिपोर्ट की गई अवधि के दौरान विकसित विभिन्न प्रौद्योगिकियों/उत्पादों के लिए आवेदन किया गया है।

प्रसार गतिविधियाँ

विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय, कृषि सूचना प्रौद्योगिकी केंद्र (एटीआईसी) और मुख्यालय स्तर पर कृषि सलाहकार सेवा और विश्वविद्यालय के अधिकार क्षेत्र के तहत विभिन्न जिलों में 16 कृषि विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से प्रौद्योगिकी के प्रसार के लिए पर्याप्त बुनियादी ढांचा और कुशल प्रणाली विकसित की है। वर्ष 2021-22 के दौरान कृषक समुदाय को जैविक बीज उत्पादन, सजावटी मछली पालन, बहुपरत सब्जी की खेती, उच्च मूल्य वाली सब्जी फसलें, वर्मी कम्पोस्टिंग, प्राकृतिक खेती, लीची उत्पाद, फल और सब्जी के प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन, मशरूम उत्पादन, मधुमक्खी पालन, के क्षेत्र में प्रशिक्षित किया गया। शून्य बजट खेती, उन्नत कृषि उपकरण, सौर वृक्ष, सूक्ष्म सिंचाई, एकीकृत फसल प्रबंधन, शून्य जुताई तकनीक, लेजर लैंड लेवलर, इनपुट डीलरों के लिए एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन प्रशिक्षण, विभिन्न फसलों की उत्पादन तकनीक आदि पर भी प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। COVID-19 महामारी के खिलाफ एहतियाती उपायों के रूप में वर्चुअल प्लेटफॉर्म जैसे गूगल मीट और वीबेक्स का उपयोग विभिन्न कृषि हितधारकों, किसानों, कृषक महिलाओं, ग्रामीण युवाओं, विस्तार कार्यकर्ताओं आदि के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए प्रभावी ढंग से किया गया। प्रसार शिक्षा निदेशालय ने जैविक दूध उत्पादन, जैविक चारा उत्पादन, एकीकृत कीट प्रबंधन और एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन, पशुओं में रोगों के प्रबंधन जैसी नई तकनीकों पर वर्चुअल मोड द्वारा ई-किसान चौपाल के माध्यम से ग्रामीण स्तर पर किसानों को नवाचार प्रौद्योगिकी हस्तांतरण किया। जैविक खेती, मधुमक्खी पालन, मशरूम की खेती, पोषक-उद्यान, गन्ने की खेती, नर्सरी प्रबंधन, सजावटी मछली की खेती, प्राकृतिक खेती, जानवरों की उन्नत नस्ल, एकीकृत कृषि प्रणाली (IFS), ग्रामीण शिल्प, छोटे जुगाली करने वाले मवेशियों में पैर और मुंह की बीमारी का प्रबंधन और कुक्कुट उत्पादन और टिकाऊ कृषि जैसे विषयों पर भी विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा किसानो को जागरूक किया गया। तिलहन 7 दालों पर फील्ड विजिट, एफएलडी, ओएफटी, सीएफएलडी, विधि प्रदर्शन, प्रौद्योगिकी सप्ताह जैसे महत्वपूर्ण दिवस एवं गतिविधियां कोविड-19 उपयुक्त व्यवहार के साथ आयोजित की गईं।

प्रसार गतिविधियाँ: एक नजर में

गतिविधियाँ	संख्या
किसान मेला	44
किसान प्रशिक्षण	2026
एफ. एल. डी.	1,916
प्रसार ज्ञान कियोस्क विकसित	80
एफ..सी.ऐस.	23267

गतिविधियाँ	संख्या
ए. इ.ओ.	58
टीवी / रेडियो टॉक	127
प्रौद्योगिकी मूल्यांकन	160
ई-किसान चौपाल	64

क्षेत्रीय कृषि मेला -2022 @ रा. प्र. के. कृ. वि. पूसा

तीन दिवसीय "पूर्वी क्षेत्र के लिए क्षेत्रीय कृषि मेला" का आयोजन डॉ. रा. प्र. के. कृ. वि. पूसा, जिला समस्तीपुर, बिहार द्वारा कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से 12 से 14 मार्च, 2022 के दौरान किया गया। डॉ. सुजय रक्षित निदेशक, भा.कृ.अनु.प-भारतीय मक्का अनुसंधान संस्थान, लुधियाना, पंजाब ने मेले का उद्घाटन किया और किसानों के लाभ के लिए क्षेत्रीय कृषि मेले के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने किसानों को मक्का की खेती के लिए विशेष रूप से मक्का बीज उत्पादन के लिए प्रोत्साहित किया जिससे वे अधिक आय अर्जित कर सकें। समापन समारोह के मुख्य अतिथि, डॉ. अशोक कुमार सिंह, उप महानिदेशक (कृषि प्रसार), भा.कृ.अनु.प. ने आय को बढाने के लिए उपज के विपणन हेतु किसान उत्पादक संगठन (एफपीडी) बनाने की अपील की। डॉ अरुण कुमार, कुलपति, बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर; डॉ. अंजनी कुमार, निदेशक, भा.कृ.अनु.प.-अटारी, जोन- IV, पटना और डॉ. राम प्रसाद साहनी, संयुक्त निदेशक, कृषि विभाग, बिहार सरकार समापन समारोह के दौरान विशिष्ट अतिथि रहे।

डॉ. आर. सी. श्रीवास्तव, माननीय कुलपति, डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, बिहार ने मेले की थीम- "कृषि अपशिष्ट के मुद्रीकरण के माध्यम से उद्यमिता विकास" के बारे में बात की और सुखेत मॉडल को एक आदर्श प्रौद्योगिकी के विशेष संदर्भ के साथ विश्वविद्यालय द्वारा विकसित विभिन्न अपशिष्ट प्रबंधन तकनीकों पर प्रकाश डाला। डॉ. पी.पी. श्रीवास्तव, रजिस्ट्रार और डॉ. के.एम. सिंह,अधिष्ठाता, स्नाकोत्तर कृषि महाविद्यालय ने भी किसान मेले पर अपने विचार व्यक्त किए। प्रदर्शनी के दौरान, कृषि विज्ञान केंद्र और एकीकृत कृषि प्रणाली मॉडल, उर्ध बागवानी और जल संचयन संरचना, और देश के विभिन्न हिस्सों में उपयोग की जाने वाली अन्य किसानों के अनुकूल प्रौद्योगिकियों के स्टालों को भी किसानों को उनकी आजीविका के लिए सशक्त बनाने हेतु प्रदर्शित किया गया।

व-फोर्टिफाइड किस्म के विमोचन के दौरान वैज्ञानिक किसान बातचीत और सीधा प्रसारण

सैक (SAC) बैठक

किसान गोष्ठी

केविके तुर्की में क्रॉप कैफेटेरिया

केविके वैशाली में माननीय कुलपति जी का भ्रमण

किसान मेला में स्टाल विजेता

केविके तुर्की में INM प्रशिक्षण

केविके तुर्की में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस कार्यक्रम

कुलपति द्वारा किसान मेले का शुभारम्भ

केविके तुर्की का स्थापना दिवस

उप महानिदेशक (कृषि प्रसार) भा.कृ.अनु.प. का भ्रमण

केले का फाईवर प्रदर्शनी

केविके तुर्की में न्यूट्री बाग़

पुरस्कार और सम्मान

विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को उनके अकादमिक और अनुसंधान उत्कृष्टता के लिए विभिन्न समाजों/संघों और संगठनों के विभिन्न स्तरों (16 अंतर्राष्ट्रीय, 77 राष्ट्रीय और 01 राज्य स्तर) के कुल 94 पुरस्कार प्राप्त हुए।

1. राष्ट्रीय पुरस्कार: कृषि विज्ञान केंद्र, पिपराकोठी ने 93वें आई.सी.ए.आर स्थापना दिवस के अवसर पर 16 जुलाई, 2021 को पंडित दीनदयाल उपाध्याय कृषि विज्ञान प्रोत्साहन पुरस्कार-2020 प्राप्त किया। माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री नरेन्द्र सिंह तोमर जी ने वर्चुअल मोड में कृषि विज्ञान केंद्र पिपराकोठी को प्रथम स्थान का पुरस्कार प्रदान किया।

2. सर्वश्रेष्ठ कृषि विज्ञान केंद्र पुरस्कार: 73वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर प्रौद्योगिकी प्रसार में उत्कृष्ट उपलब्धि, किसान समूह के गठन और अन्य हितधारकों के साथ उत्कृष्ट सहयोग के सम्मान में कृषि विज्ञान केंद्र, बिरौली को माननीय कुलपति, डॉ. आर.सी. द्वारा "सर्वश्रेष्ठ कृषि विज्ञान केंद्र पुरस्कार" से सम्मानित किया गया। डॉ. आर.के. तिवारी, अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केंद्र, बिरौली ने पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र प्राप्त किया।

3. अभिनव किसान पुरस्कार- 2021 - श्रीमती रेखा देवी, ग्राम- मानिकपुर, सरैया (मुजफ्फरपुर), को डॉ राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर द्वारा अभिनव किसान पुरस्कार-2021 से सम्मानित किया गया। कृषि के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए उन्हें 73वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर माननीय कुलपति, डॉ. आर.सी. श्रीवास्तव द्वारा यह पुरस्कार प्रदान किया गया। उन्होंने कृषि विज्ञान केंद्र सरैया से सीखी गयी लाख चूड़ी बनाने की तकनीक को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

उपरोक्त के अलावा डॉ. एस.पी. सिंह और उनकी टीम को मोहाघेग अर्दबिली विश्वविद्यालय, ईरान द्वारा 10 जून, 2021 को आयोजित प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण के संरक्षण पर दूसरे अंतर्राष्ट्रीय और 5वें राष्ट्रीय सम्मेलन में "कैल्केरियस मिट्टी में लोप प्लॉट तकनीक के माध्यम से संकर चावल और मक्का की उत्पादकता के लिए पोषक तत्व योगदान की अस्थायी और स्थानिक परिवर्तनशीलता" विषय पर पर शोध व्याख्यान प्रस्तुति हेतु बेस्ट ओरल पेपर प्रेजेंटेशन अवार्ड दिया गया। डॉ. एम.एल. मीणा अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केंद्र ने बीएचयू वाराणसी में 4-6 अक्टूबर 2021 को आईएसईई राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान आईएसईई फेलो अवार्ड 2021 प्राप्त किया साथ हीं डॉ विनय कुमार शर्मा, अध्यक्ष , कृषि जैव प्रौद्योगिकी और आणविक जीव विज्ञान विभाग को प्लांट जेनेटिक्स, प्लांट ब्रीडिंग और प्लांट जीनोमिक्स के क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए ईएसडीए फैलोशिप अवार्ड-2021 प्रदान किया गया।

माननीय कुलपति महोदय के पुरस्कार

- शिक्षा में उत्कृष्टता और नेतृत्व के लिए सबसे प्रभावशाली कुलपति पुरस्कार (डायनेर्जिक बिजनेस सॉल्यूशन 8 अप्रैल, 2021 को प्रदान किए गए गोल्डन एआईएम पुरस्कार) के अंतर्गत प्रदान किया गया।
- सी.एच.ए.आई-मानद फेलो अवार्ड-2021 दिनांक 16-09-2021 को बागवानी सहित कृषि में जल उत्पादकता बढ़ाने के लिए अभिनव दृष्टिकोण पर वैश्विक सम्मेलन के दौरान, 16-19 सितंबर, 2021 को एएसएम फाउंडेशन, नई दिल्ली और प्रो जयशंकर तेलंगाना राज्य कृषि विश्वविद्यालय (पीजेटीएसएयू), राजेंद्रनगर, हैदराबाद द्वारा आयोजित कार्यक्रम में प्रदान किया गया।
- ज़ी हिंदुस्तान द्वारा कृषि नायक पुरस्कार माननीय केंद्रीय कृषि और किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार द्वारा 25-01-2022 को नई दिल्ली में नए युग की कृषि में अनुकरणीय योगदान के लिए प्रदान किया गया।
- महादेवी वर्मा स्मृति लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड दिनांक 26-03-2022 को आयोजित - जीकेसी- महादेवी वर्मा पुरस्कार समारोह सत्याग्रह मंडप, गांधी स्मृति और दर्शन समिति, राजघाट, नई दिल्ली के दौरान प्रदान किया गया।

हिन्दुस्तान

पूसा कृषि विवि को मिला पुरस्कार

वित्तीय अवलोकन रु. (करोड़ में)

Sl. No.	Particular	Received From						
		DARE	ICAR	Govt. of India	State Govt.	University Receipt	Received Total	Expenditure
01	Grant-in-Aid Salary	127.00					127.00	127.00
02	Grant-in-Aid General	15.00					15.00	15.00
03	Grant-in-Aid Capital	45.00					45.00	45.00
04	ICAR-AICRP (General)		2.30				2.30	2.30
05	ICAR Education Division		2.83				2.83	2.83
06	Other/Misc. (including KVK+KVK project+NAHEP+other+ testing fee & Foreign Money, Other Fellow)		55.77	5.06	81.74	20.12	162.69	162.69
	Total	187.00	60.90	5.06	81.74	20.12	354.82	354.82
	Grant Total						354.82	354.82

कोविड-19 से जंग: एक टीम प्रयास

कोविड -19 के प्रसार को रोकने के लिए सख्त नियंत्रण उपाय जैसे विश्वविद्यालय का गेट सील करना, शहर से कर्मचारियों की आवाजाही पर प्रतिबंध, गर्भवती महिलाओं और विकलांग कर्मचारियों को छुट्टी पर भेजने को अपनाया गया। इसके अलावा, जिला चिकित्सा अधिकारियों की मदद से विश्वविद्यालय परिसर में विश्वविद्यालय अस्पताल, पीएचसी और सीएचसी में छात्रों, कर्मचारियों और उनके परिवार के सदस्यों, और मजदूरों के लिए मास लेवल आरटी-पीसीआर और एंटीजन टेस्ट और मास लेवल टीकाकरण कार्यक्रम की व्यवस्था की गई। साथ ही कर्मचारियों के प्रभावित होने पर विभिन्न शैक्षणिक इकाइयों को आंशिक रूप से बंद करने के अलावा कक्षा, प्रशासनिक भवनों, पुस्तकालय और संपर्क के अन्य बिंदुओं का सामूहिक स्तर पर सैनिटाइजेशन किया गया। परिसर में आईडी आधारित प्रवेश को लागू करके सख्त सतर्कता और कोविड के उचित व्यवहार का पालन सुनिश्चित किया गया। कोविड संक्रमण के संदिग्ध कर्मचारियों/छात्रों को पूर्ण उपचार और स्वस्थ होने के लिए तुरंत विश्वविद्यालय अस्पताल में भर्ती कराया गया, जिसके परिणामस्वरूप परिसर में महामारी के वजह से एक भी जीवन ह्रास नहीं हुआ।

छात्र कल्याण गतिविधियाँ

इंटर कॉलेज और इंटर यूनिवर्सिटी भाषण प्रतियोगिता

छात्र कल्याण निदेशालय, रा.प्र.के.कृ.वि. पूसा द्वारा 25 अक्टूबर और 27 अक्टूबर 2021 को 25वीं कृषि विज्ञान कांग्रेस 2021 के लिए भाषण प्रतियोगिता का आयोजन को पंचतंत्र हॉल में किया गया । भाषण प्रतियोगिता का विषय "स्थायी कृषि के लिए ऊर्जा का अनुकूलन" था। इस भाषण की विजेता मत्स्यकी महाविद्यालय, ढोली से सुश्री मेघा और सीओएफ, ढोली से उपविजेता सुश्री अलीना एंटनी बनी।

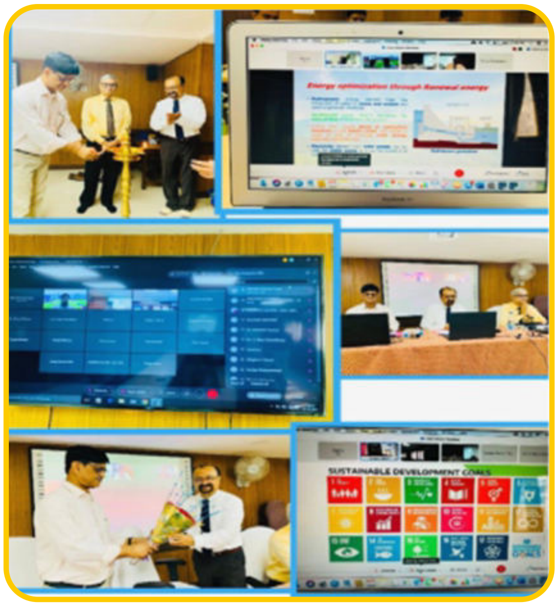

अंतर-विश्वविद्यालय प्रतियोगिता का आयोजन 27 अक्टूबर, 2021 को जोन IV के जोनल समन्वयक के रूप में माननीय कुलपति की अध्यक्षता में किया गया था। इस कार्यक्रम में 12 विश्वविद्यालयों के छात्रों ने भाग लिया। विजेता ओडिशा कृषि एवं तकनिकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर के श्री सोहम शाऊ, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय , कांके, रांची के श्री रौनक सिंह ने दूसरा और रा.प्र.के.कृ.वि., पूसा ने तीसरा और चौथा स्थान हासिल किया। पहले दो विजेताओं को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में 13-16 नवंबर को होने वाली 25वीं कृषि कांग्रेस के लिए नामांकित किया गया था।

केंद्रीय सुविधाएं

विश्वविद्यालय पुस्तकालय

- विश्वविद्यालय पुस्तकालय ने सभी महाविद्यालयों के स्नातक और परास्नातक कार्यक्रमों में नव प्रवेशित छात्रों के लिए विश्वविद्यालय पुस्तकालय नियम विनियमों, ई-संसाधनों और सेवाओं पर कॉलेज वार ओरिएंटेशन-सह-संवेदीकरण कार्यक्रम आयोजित किया छात्रों को प्रामाणिक शैक्षणिक ई-लर्निंग संसाधनों के विशेष संदर्भ में डिजिटल वातावरण में सूचना खोज, पहुंच और उपयोग के विषय पर शिक्षित किया गया।
- कोविड महामारी और लॉकडाउन के प्रभावों के बावजूद, पुस्तकालय में कुल 20,015 उपयोगकर्ताओं का फुटफॉल दर्ज किया गया।
- छात्रों के शैक्षणिक/अनुसंधान आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए कुल 4420 (2388 निर्गत और 2032 आगत) दस्तावेजों को परिचालित किया गया
- ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस कैटलॉग (OPAC) पाठ्य संसाधनों के पूर्ण संग्रह का चित्रण करते हुए किसी भी समय और कहीं भी उपयोग के लिए वेब ओपेक बनाया गया तथा 4888 नये पुस्तकों के बिब्लिओग्राफ़िक डाटा को अपलोड किया गया।
- कुल 1627 मुद्रित पुस्तकें और 132 (121 राष्ट्रीय और 11 अंतर्राष्ट्रीय) वैज्ञानिक पत्रिकाएं (प्रिंट+ऑनलाइन) खरीदी गईं तथा एक सामाजिक-आर्थिक सांख्यिकीय डेटाबेस-IndiaStat.com और NIPA-(10 लाख से अधिक प्रतिस्पर्धी प्रश्नों का प्रश्न बैंक)-एक ऑनलाइन खोज योग्य संसाधन की सदस्यता ली गई।
- विश्वविद्यालय के बौद्धिक दस्तावेजों के संग्रह हेतु एक संस्थागत भंडार बनाया गया और 186 शोध दस्तावेज (वार्षिक रिपोर्ट, शोध लेख, किताबें, पुस्तक अध्याय और अन्य दस्तावेज जैसे प्रयोगशाला मैनुअल, तकनीकी बुलेटिन, फ़ोल्डर्स, लीफलेट इत्यादि) को अधिक दृश्यता और उपयोग के लिए डिजिटल संग्रह बनाने हेतु अपलोड किया गया।।
- डिजिटाइजेशन कार्यक्रम के तहत कुल 662 थीसिस (एम.एस.सी 450 और पीएचडी 212) के कुल 65643 पेज और दुर्लभ दस्तावेजों को डिजिटाइज किया गया है और 157 थीसिस कृषिकोश में अपलोड किए गए।
- पाठ्य संसाधनों तक पहुंच बढ़ाने के लिए 2764+ वैज्ञानिक ऑनलाइन पत्रिकाओं और विभिन्न प्रकाशकों से डाउनलोड की गई तथा 1174 ई-पुस्तकों की पीडीएफ प्रतियों को कभी भी/कहीं भी ऑनलाइन एक्सेस प्रदान किया गया।
- पाठ्य संसाधनों/सेवा को समृद्ध करने पर 79.92 लाख रुपये खर्च किए गए (पत्रिकाओं पर 31.57 लाख, किताबों पर 28.80 लाख और ई-डेटाबेस पर 19.55 लाख) और पुस्तकालय ने विभिन्न पुस्तकालय सेवाएं प्रदान करने के क्रम में हीं 10.557 लाख रुपये (9.60 पुस्तकालय छूट और .95704 लाख) का राजस्व भी उत्पन्न किया है।

एरिस सेल

- विश्वविद्यालय मुख्यालय परिसर के एरिस सेल ने एक केंद्रीय सुविधा के रूप में सभी विभागों, अनुसंधान और विस्तार इकाइयों और सभी कॉलेजों के बीच संबंध स्थापित करके पूरे विश्वविद्यालय के लिए अपनी सेवाओं का विस्तार वर्ष 2021-2022 के दौरान किया। इसकी प्रमुख गतिविधियां इस प्रकार हैं:

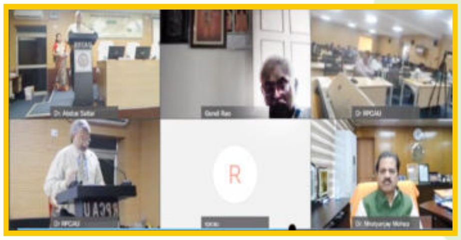

- विश्वविद्यालय का दूसरा दीक्षांत समारोह पण्डित दीन दयाल उपाध्याय उद्यानिकी और वानिकी महाविद्यालय, पिपराकोठी में आयोजित किया गया एरिस सेल के आधिकारिक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म "यूट्यूब" पर लाइव स्ट्रीम किया गया।
- सभी नए प्रवेशित छात्रों और कर्मचारियों के लिए विश्वविद्यालय ई-मेल खाते और इंटरनेट उपयोगकर्ता खाते बनाए गए; मौजूदा उपयोगकर्ताओं के दोनों खातों का रखरखाव भी एरिस कक्ष द्वार किया गया।
- यूनिवर्सिटी लोकल एरिया नेटवर्क, यूनिवर्सिटी वेबसाइट और अपडेशन गतिविधियों का दिन-प्रतिदिन रखरखाव किया गया।
- दैनिक आधार पर डिजिटल नोटिस बोर्ड पर सामग्री का प्रकाशन और अद्यतनीकरण किया गया।
- नवनिर्मित अनुसंधान केंद्र, गन्ना अनुसन्धान संस्थान और अन्य शैक्षणिक भवनों को ऑप्टिकल फाइबर केबल से जोड़ा गया।

प्रकाशन विभाग

विश्वविद्यालय प्रकाशन विभाग ने आधुनिक किसान डायरी, कॉफी टेबल बुक्स, वार्षिक रिपोर्ट, विश्वविद्यालय समाचार पत्र, आधुनिक किसान पत्रिका, किसान मेला स्मारिका, पत्रक, फोल्डर, तकनीकी बुलेटिन, प्रैक्टिकल मैनुअल, प्रशिक्षण मैनुअल और रिपोर्ट आदि जैसे 105 प्रकाशन प्रकाशित किए तथा विभिन्न शैक्षणिक और प्रशासनिक दस्तावेजों के 20.63 लाख पृष्ठ मुद्रित किए । इसके अलावा, प्रकाशन विभाग ने सफलतापूर्वक 253 प्रेस विज्ञप्ति जारी की, विभिन्न समाचार पत्रों /टीवी चैनलों में 600 समाचारों को प्रकाशित किया, साथ हीं माननीय कुलपति और अन्य वैज्ञानिकों के 72 लाइव साक्षात्कार की भी व्यवस्था की।

हिंदी पखवाड़ा

विश्वविद्यालय में हिंदी भाषा के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए दिनांक 09-09-2021 से 24-09-2021 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । इस उत्सव के दौरान, विभिन्न कॉलेजों के हिंदी और गैर-हिंदी भाषी छात्रों के लिए विभिन्न वाद-विवाद, निबंध प्रतियोगिता, सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, पेंटिंग और अन्य प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। साथ ही संकायों के लिए तकनीकी पेपर लेखन और कमेंट्री प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को 24 सितंबर, 2021 को विद्यापति सभागार में माननीय कुलपति द्वारा प्रमाण पत्र और पुरस्कार वितरित किए गए।

पियर रिव्यू टीम का विश्वविद्यालय में आगमन

डॉ. गया प्रसाद, पूर्व कुलपति, सरदार वल्लभभाई पटेल युनिवर्सिटी ऑफ़ एग्रीकल्चर एंड टेक्नोलॉजी, मोदीपुरम की अध्यक्षता में पियर रिव्यू टीम, डॉ (श्रीमती) सपना गौतम, प्रोफेसर और अध्यक्ष, सामुदायिक विज्ञान, चौधरी सरवन कुमार हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर, डॉ वाई.एम. शुक्ला, अधिष्ठाता, कृषि संकाय, आनंद, गुजरात के साथ डॉ पी.के. श्रीवास्तव, अधिष्ठाता, एसपी बागवानी और वानिकी महाविद्यालय, नवसारी कृषि विश्वविद्यालय नवसारी, डॉ (श्रीमती) अपर्णा चौधरी केंद्रीय मतस्य शिक्षा संस्थान, मुंबई और डॉ के.एम मंजेहा, भा.कृअनु.प., नई दिल्ली ने 3-7 मार्च, 2022 को चल रहे शैक्षणिक कार्यक्रम के साथ-साथ विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयों की मान्यता के संबंध में विश्वविद्यालय मुख्यालय और विभिन्न इकाइयों का दौरा किया। । अपने 4 दिवसीय प्रवास के दौरान, टीम ने परास्नातक कृषि महाविद्यालय, पूसा; आधार विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय, पूसा; सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय; पूसा; कृषि अभियांत्रिकी महाविद्यालय, पूसा; कृषि व्यापार एवं ग्रामीण प्रबंधन महाविद्यालय; पूसा सहित सभी इकाइयों का दौरा किया। तिरहुत कृषि महाविद्यालय, ढोली, मत्स्यकी महाविद्यालय, ढोली सहित सभी विभागों और उपलब्ध सुविधाओं जैसे क्लास रुम, सेमिनार रुम, लाइब्रेरी, लैबोरेटरी, इंस्ट्रक्शनल फार्म और चल रहे शैक्षणिक कार्यक्रम की आवश्यकता के अनुसार अन्य सुविधा की उपलब्धता का जायजा लिया। यात्रा के दौरान, उन्होंने सभी अधिष्ठाताओं, निदेशकों, संकाय सदस्यों, छात्रों और कर्मचारियों के साथ बातचीत की और पिछले पांच वर्षों के दौरान हुई प्रगति की समीक्षा की।

पीर रिव्यु टीम का परास्नातक कृषि महाविद्यालय, पूसा भ्रमण

पीर रिव्यु टीम का पुस्तकालय भ्रमण

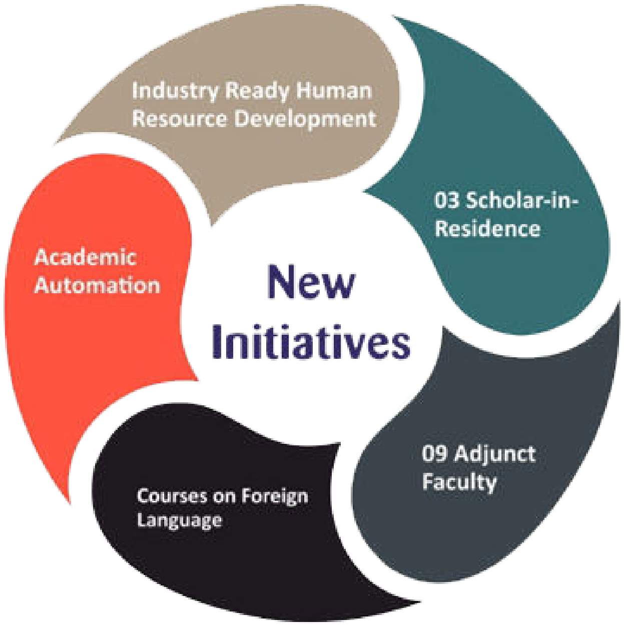

FUTURE STRATEGIES TO IMPROVE AGRICULTURE IN RPCAU

EDUCATION	RESEARCH	EXTENSION
Establishment of College of Veterinary Science	Technologies to live with disaster especially floods	Digitization of agriculture
Integrated programme on Bioinformatics	Technologies to create decent livelihood opportunities	Capacity building of all stakeholders to fit into modern agriculture
Ne programmes like Nano technology, Computational Biology Robotics, Artificial Intelligence and Data science	Genetic resource conservation	Development of Farmer producer organizations
Establishment of a new Indigenous traditional knowledge department	Development of new varieties for ecologically challenged areas	Optimum utilization of social media for technology dissemination
Vedic agriculture	Translating academic research to Entrepreneurship /start-ups	High tech solutions for sustainable agriculture
	Climate smart agriculture	

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय

पूसा, समस्तीपुर, बिहार-848125